अंक - 29 | सन् -2022

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

स्वतंत्रता दिवस समारोह-2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजप्रभा

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

अंक - 29 | विक्रम सम्वत्-2079 | सन् -2022

संरक्षक

सुश्री वंदना के. जैन

मुख्य आयुक्त

प्रधान सम्पादक

श्री चन्द्र प्रकाश गोयल

प्रधान आयुक्त

प्रबन्ध सम्पादक

श्री मुकेश कटारिया

संयुक्त आयुक्त

सम्पादक

श्री मनोज कुमार सैली

सहायक आयुक्त

कार्यकारी सम्पादक दल

श्री अशोक कुमार बिरानियां, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री हरकेश कुमार मीना, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री प्रेम प्रकाश मीना, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री मानसिंह गुर्जर, कर-सहायक

केवल विभागीय प्रयोगार्थ

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	संदेश	3–4
2.	संरक्षक की कलम से	5
3.	प्रधान सम्पादक की कलम से	6
4.	संदेश	7–10
5.	प्रबन्ध सम्पादक की कलम से	11
6.	सम्पादक की कलम से	12
7.	अकेलापन	13
8.	जड़ता व गति	14
9.	बदली	15–17
10.	संतान	18
11.	तरकश	19
12.	मुक्ति	19
13.	तोहफ़ा	20–21
14.	प्यारी हिन्दी	22
15.	जीएसटी दिवस समारोह–2022	23–24
16.	आजादी का अमृत महोत्सव 2022 : आईकोनिक वीक समारोह का आयोजन	25–28
17.	कार्यालय में आयोजित खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी	29
18.	कार्यालय में आयोजित कोविड टीकाकरण शिविर	30
19.	आजादी का अमृत महोत्सव 2022 : एक गौरवपूर्ण प्रयास	31–32
20.	मुस्कान	33
21.	डिजिटल डीटोक्स – आज की आवश्यकता	34–35
22.	मेरा भाई	36
23.	बचपन सुख और हम	37
24.	अर्ध सत्य	38
25.	क्यों लिखें हम	39
26.	इमली	40
27.	वो तन्हा दरख़्त	40
28.	ये राणा की नगरी है	41
29.	मेरा कौन बनेगा करोड़पति का सफर	42–43
30.	पिता – एक हमसाया	44
31.	नगर राजभाषा कार्यवन्यन समिति पुरस्कार	45
32.	राजभाषा पखवाड़ा 2021 की झलकियाँ	46–48
33.	राजभाषा पुरस्कार	49–52
34.	जीते वही जो, हँसते गाते जीते चले गये	53
35.	होरा ज्ञात करने का नियम	54–56
36.	सशक्त : अबला	57
37.	मित्रों	58
38.	मेरा वतन	58
39.	आत्मनिर्भर भारत–उन्नति की ओर बढ़ते कदम	59–60
40.	शुक्रवार	61
41.	कोरोना कहर–19	62
42.	उत्तरी सिक्किम – धरती का स्वर्ग – यात्रा संस्मरण	63–67
43.	हिंदी पखवाड़ा–2021 : एक रिपोर्ट	68–70
44.	चित्रकारी/विभागीय गौरव	71–72

सत्यमेव जयते

सदस्य (प्रशासन)
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड,
नई-दिल्ली

संदेश

यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क जयपुर की विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 29वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विभागीय हिंदी पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अभिव्यक्तियों को एक मंच प्रदान करती है तथा पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा में निखार लाने का भी अवसर मिलता है।

राजभाषा के प्रचार- प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं की सशक्त भूमिका होती है। मुझे विश्वास है कि इस दिशा में 'राजप्रभा' पत्रिका का यह अंक अपनी रचनाओं के माध्यम से जहाँ एक ओर कर्मचारियों की सृजनात्मकता को राष्ट्रभाषा में अभिव्यक्त करेगा, वहीं दूसरी ओर आयुक्तालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी भाषा में कार्य करने हेतु एक नई स्फूर्ति एवं प्रेरणा भी प्रदान करेगा ।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए इसके संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को अपनी शुभकामनाएँ देती हूँ।

(संगीता शर्मा)

सत्यमेव जयते

सदस्य (कर नीति)
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर की विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का नवीन अंक प्रकाशित किया जा रहा है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित गतिविधियों में सहायक सिद्ध होगी।

हिंदी भाषा हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। यह न केवल साहित्य व प्रशासन की भाषा है बल्कि विज्ञान, तकनीकी एवं प्रत्येक विधा को अभिव्यक्त करने में भी सशक्त है। हमारा प्रयास है कि हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से सरकारी कामकाज में हिंदी भाषा के प्रयोग को और अधिक बल मिलेगा व हिंदी भाषा निरंतर पुष्पित- पल्लवित होती रहेगी।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए इसके प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(संदीप कुमार)

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (जयपुर जोन)
जयपुर

संरक्षक की कलम से

किसी भी सभ्यता और संस्कृति के विकास में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। भारतवर्ष में भी सभ्यता और संस्कृति के विकास में हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी का अतुलनीय योगदान रहा है।

भारतीय संविधान द्वारा हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। हिंदी को यह सम्मान मिलना इस बात का प्रमाण है कि यह न केवल बहुसंख्यक भारतीयों की भाषा है वरन् विभिन्न भाषा समुदायों को भी आपस में जोड़ती है। भौगोलिक आधार पर भी हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि इसको बोलने वाले सभी महाद्वीपों में फैले हुए हैं। इसी कारण हिंदी की क्षमता और शक्ति वैश्विक स्तर पर भी दिनों-दिन बढ़ रही है। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने में भी हिंदी भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूं जिन्होंने 'राजप्रभा' पत्रिका के प्रकाशन में योगदान दिया है साथ ही पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(वंदना के. जैन)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर

प्रधान संपादक की कलम से

'राजप्रभा' के प्रधान संपादक के रूप में मेरा यह दूसरा प्रयास है। पिछले अंक के प्रकाशन से मिली आपकी प्रतिक्रियाओं से मुझे इस अंक के प्रकाशन हेतु अधिक प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिला है और इसी प्रेरणा के फलस्वरूप पत्रिका का यह अंक हिंदी के सहज और शाश्वत प्रवाह में सहयोगी बने इसी भावना के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी से हिंदी को जोड़ने पर सकारात्मक परिणाम भी दिखाई दिए हैं। इसके प्रयोग से जन-मानस की यह भाषा जहां एक ओर पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम कर रही है वहीं दूसरी ओर हमें शेयर मार्केट, खेल जगत, चिकित्सा, विज्ञान तथा उद्योग एवं व्यापार जगत के साथ-साथ मनोरंजन से भी जोड़ती चली जा रही है। वर्तमान में हिंदी सूचना प्रौद्योगिकी की शक्ति बन रही है। सोशल मीडिया भी विचारों के आदान-प्रदान में शक्ति स्रोत बनकर उभरा है। इस शक्ति स्रोत में हिंदी की भूमि भी निरंतर उर्वर हो रही है। हिंदी का आधुनिकीकरण भी हो रहा है। इन तमाम कारणों से हिंदी हर तरह से अधिक समर्थ, सक्षम एवं सर्वस्वी भाषा बनकर उभरी है।

विगत के अंको की भाँति 'राजप्रभा' के इस अंक में भी लेखों का चयन सहज रूप से किया गया है। पत्रिका के सभी रचनाकार एवं लेखकों को हार्दिक धन्यवाद जिनकी लेखनी एवं सहयोग से पत्रिका मूर्त रूप में साकार हो सकी।

(चन्द्र प्रकाश गोयल)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, अलवर
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील, जोधपुर

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान जोन में स्थित सभी आयुक्तालयों द्वारा संयुक्त रूप से विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

केंद्र सरकार के सभी विभागों में भिन्न-भिन्न प्रान्तों के विभिन्न भाषा-भाषी अधिकारीगण कार्य करते हैं। उनकी विभिन्न संस्कृतियों एवं अन्य विविधताओं के आदान-प्रदान के लिए एक सामान्य सूत्र भाषा की आवश्यकता होती है।

हिंदी भाषा की सरल शैली इसे हमारी अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का भी एक अहम स्त्रोत बनाती है। इस उद्देश्य के साथ ही राजभाषा पत्रिका 'राजप्रभा' विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यगणों को अपनी साहित्यिक अभिरूचि को साकार करने के लिए एक मंच प्रदान करती है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाने वाली यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्णरूपेण सफल होगी।

(जय प्रकाश सिंह)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर
(मु.-जयपुर)

संदेश

विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' से जुड़ने का जो सुखद अवसर मिला है उससे मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। भारत एक बहुभाषी देश है तथा इसकी समस्त भाषाएं इस देश की बहुरंगी संस्कृति एवं सभ्यता की परिचायक हैं तथा इन सभी भाषाओं के बीच राजभाषा हिंदी का एक विशिष्ट स्थान है।

इस पत्रिका की प्रगति एवं निरंतर विकास की कामना करते हुए मैं यह अपेक्षा करता हूं कि हम सब हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे तथा सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का ही प्रयोग करेंगे।

मैं कामना करता हूँ कि पूर्व अंकों की तरह पत्रिका का यह अंक भी अपार सफलता प्राप्त करे ।

शुभकामनाओं के साथ।

(सुग्रीव मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जोधपुर

संदेश

जयपुर जोन की विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 29वें अंक का प्रकाशन इस बात का प्रतीक है कि यहाँ के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा नीति के अनुपालन के प्रति काफी उत्साह और लगाव है।

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी एवं इंटरनेट का युग होने के कारण कम्प्यूटर पर सहजता से हिंदी में कार्य किया जा सकता है। अत: इस परिप्रेक्ष्य में राजभाषा हिंदी भी सूचना प्रौद्योगिकी में होते बदलाव के अनुरूप ढ़लते हुए नई भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

इस पत्रिका की प्रगति एवं निरंतर विकास की कामना करते हुए मैं यह अपेक्षा करता हूँ कि हम सब हिंदी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार करने के लिए तत्पर रहेंगे तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का ही प्रयोग करेंगे।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए सभी सहयोगीगण को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

23/8/2022

(राजीव अग्रवाल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, उदयपुर/
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील, जयपुर/
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जोधपुर

संदेश

विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 29वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास एवं सभी वर्ग के अधिकारियों के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनने के साथ ही राजभाषा हिंदी के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मैं सभी अधिकारियों व कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों के साथ-साथ संपादक मंडल को अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

(डॉ. बी.एस. मीना)

सत्यमेव जयते

संयुक्त आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय
जयपुर

प्रबंध संपादक की कलम से

भारत संघ की राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विभाग द्वारा प्रकाशित की जाने वाली 'राजप्रभा' पत्रिका वार्षिक पत्रिका है। इस पत्रिका के अब तक 28 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने हेतु पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना एक प्रमुख दायित्व है। इसी दायित्व को पूरा करने की दिशा में पत्रिका का यह 29वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच भी प्रदान हुआ है।

कार्यालय में अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी सोच, अपने विचार एवं ज्ञान को सुंदर शब्दों में पिरोकर पत्रिकाओं के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं। आप सभी जानते हैं कि हिंदी हमारी राजभाषा है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधती है। राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा का प्रचार-प्रसार प्रेरणा व प्रोत्साहन पर आधारित है जिसे ध्यान में रखकर विभिन्न गतिविधियां, समारोह और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अत: देश के नागरिक होने के नाते राजभाषा का सम्मान करना हम सभी का दायित्व है ।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से आह्वान करता हूँ कि राजभाषा कार्यान्वयन में कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपनी भूमिका का निर्वहन करें ताकि कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर उपलब्धियां हासिल करता रहे।

पत्रिका के माध्यम से मैं कहना चाहूँगा कि :-

हिंदी हमारा अभिमान ।

हिंदी हर भारतवासी का स्वाभिमान ।।

(मुकेश कटारिया)

सत्यमेव जयते

सहायक आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय
जयपुर

संपादक की कलम से

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा सीमा शुल्क, जयपुर की विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' का 29वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत गर्व का अनुभव कर रहा हूँ।

भाषा के माध्यम से हम अपनी विरासत, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुँचाते है। यह देखना बहुत ही सुखद है कि जिस प्रकार हिंदी भाषा सभी देशवासियों के आपसी बंधुत्व को प्रगाढ़ करती है उसी प्रकार 'राजप्रभा' भी कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तक सुगमता से पहुँचकर आपसी विचारों को आदान-प्रदान करने का सेतु बनी हुई है। किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी मातृभाषा में मौलिक लेखन करना बहुत ही सहज और सरल होता है। सहज भाव से अपनी मातृभाषा में सरकारी कार्य करके हम अपने राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों को भी आसानी से पूरा कर सकते हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु 'राजप्रभा' के इस अंक में विभिन्न विषयों पर रोचक, सूचनाप्रद और ज्ञानवर्धक लेखों को समाहित करने का प्रयास किया गया है। पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में वरिष्ठ अधिकारियों सहित सभी वर्ग के अधिकारियों की लेखनी का योगदान रहा है। पत्रिका के प्रकाशन में सभी वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा दिए गए मार्गदर्शन हेतु मैं इन सभी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने पर सभी रचनाकार, सहयोगी तथा संपादक मंडल का भी आभार प्रकट करता हूँ एवं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी तरह आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

(मनोज कुमार सैली)

अकेलापन

मंजूर अली अंसारी, आयुक्त (in-situ), केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

घर के बड़े लॉन में कुर्सी पर बैठे सेवानिवृत्त सक्सेना जी आज बार बार भाव विह्वल हो रहे थे।

कभी अपने द्वारा बनाए सपनों के घर को निहारते तो कभी लॉन की हरी घास को टुकुर-टुकुर देखते। सहसा कभी स्मृतियों में खो जाते।

अपने बच्चों के बालपन को याद कर कभी मुस्कुराते हैं तो कभी बेटे-बेटी की सफलता पर आह्लादित होते हैं। बेटे का यूएस में बड़ी कंपनी के बड़े पैकेज पर नौकरी मिलने पर और बेटी का पूर्ण सेटलमेंट सुखी जीवन पर कहीं ना कहीं वह आज भी सोच कर आनंद से भर जाते हैं। पर जीवन के साठोत्तरी भाग में जीवनसंगिनी के साथ होने के बाद भी अकेलेपन की टीस उनके मनोभावों को क्षण भर में परिवर्तित कर देती है और वह अपने को अंदर और बाहर दोनों ही तरफ से स्वयं को जीर्ण-शीर्ण महसूस करते हैं।

रोजाना बेटा सुबह 10:00 से 11:00 के बीच में मोबाइल से उनसे बात करता है। बेटे का जब भी फोन आता सक्सेना जी कहते हैं बेटा हम यहां ठीक हैं तुम अपना और बहु बच्चों का ख्याल रखना। यह कहते कहते उनकी आंखें नम हो जाती पर बेटे को एहसास नहीं होने देते थे वह अकेलापन महसूस करते हैं।

उस दिन भी लॉन में कुर्सी पर बैठे बेटे का फोन का इंतजार कर ही रहे थे कि अचानक उनकी तबीयत बिगड़ती हुई लगी वह आवाज देने की कोशिश करते पर आवाज मुंह से बाहर न निकल सकी। उधर उसी समय बेटे की फोन की घंटी मोबाइल पर बजने लगी वह उसे निहारते रहे पर हाथ से नहीं उठा सके। बार-बार पापा के मोबाइल पर घंटी बजने के बाद भी जब मोबाइल पिकअप नहीं हुआ तो बेटे ने रामू काका को फोन किया तो उन्होंने रुंधे गले से बस इतना कहा बेटा पिताजी नहीं रहे। पापा के देहावसान की सूचना ने उसे अस्थिर कर दिया तभी सहसा उसके फोन पर बॉस का फोन गूंज उठा। बॉस उधर से कह रहा था अभी तुम्हारे प्रोजेक्ट का टारगेट पूरा नहीं हुआ है तुम जल्द कंप्लीट करो और आज ही प्रोजेक्ट सबमिट करो। बेटा उधेड़बुन में पड़ा रहा।

इधर मां निर्विकार रूप से मकान की छत को देखती घूरती रही।

❑❑

जड़ता व गति

डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार त्रिपाठी, संयुक्त आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

जड़ता ने बांधा मन मेरा,
अवसादों ने घेरा ।
अहा ! तिमिर ने ग्रसित किया है,
स्वप्रिल नया सवेरा ।।

नीरस में रस भरूँ मैं कैसे,
जड़ता में गति लाऊँ?
दो वर वीणा वादिनी ! ऐसा,
कर कुछ सर्जन जाऊँ ।।

किंकर्तव्यविमूढ़ से मन को
अभिप्रेरित कर जाऊँ ।
भर लूँ ऐसी दीप्ति हृदय में
जगमग ज्योति जगाऊँ ।।

रत्नप्रसविनी वसुधा में जब,
कर्म बीज मैं बोऊँ ।
करूँ प्रतीक्षा अपलक फल की
नूतन स्वप्न संजोंऊँ ।।

अहा ! प्रदीप्त हुआ मन मेरा,
आशा ने जब घेरा ।
घोर तिमिर की हुई विदाई,
स्वर्णिम नया सवेरा ।।

मैंने ही तो किये कर्म थे,
उद्यत हो निशि - दिन जब ।
चखा स्वाद था अनुपम ! अद्भुत !
मीठे फल का तो तब ।।

क्यों फिर नहीं खींच सकता अब,
प्रत्यंचा फिर धनु की ?
इच्छित को परिणत करना ही,
सार्थकता जीवन की ।।

मन पर विजय किया अर्जुन ने,
कृष्ण नीति पर चल कर ।
अभ्यासों की कठिन श्रृखंला,
अवसादों की बलि पर ।।

मार्ग यही है सबका रे मन !
सर्जक होकर रहना ।
कलियों का पुष्पित होना अरू,
झरनों का नित बहना ।।

प्रकृति और सब ऋतुओं की गति,
यही कहानी कहते ।
गति ही जीवन, जीवन ही गति,
सूर्य-चंद्र सब करते ।।

अपनी धरती भी गति करती,
नदियाँ कल-कल करतीं ।
कविता की निर्झरणी भी गति,
सृजन - भाव जो भरती ।।

गति ही अणु में, गति ही विभु में
गति का ही आवर्तन।
गति का ही अवलम्बन लेकर,
विजयी हो अब रे मन!

बदली

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

धनिया एक अतिसाधारण आदमी था उसकी पत्नी जीरा भी वेद विहित विधि से जीवनयापन करने वाली स्त्री थी। बड़ा बेटा खिलाड़ीराम और छोटा बेटा डमरू था। घर में बूढ़ी विधवा माँ, बाल विधवा बुआ, एक बैल गाड़ी और एक पुश्तैनी झोंपड़ी, ये उसकी कुल जमा पूँजी थी।

राजा का राज था, वो भी राज्य कर्मचारी था। उसने गाँव में ही रह कर राज्य की सेवा करने की गुहार लगाई ताकि उसके परिवार की ज़िम्मेदारी भी वो उठा सके। राजस्व संकलन में वो सबसे निम्न स्तर का कर्मचारी था। ईमानदारी से काम करता। कोई उसके काम की शिकायत कभी नहीं करता था। ख़ाली समय में राम भजन करता और बड़े अच्छे भजन ख़ुद लिखता भी था। कभी गाँव में या आस-पास कोई जागरण होता तो उसे बुलाया जाता।

उसकी पत्नी भी बड़ी मेहनती थी। दिन भर गोबर के उपले थापती और ख़ुद बैल गाड़ी हाँक कर आस-पास के गाँव में बेच आती। सरस्वती की भी उस पर असीम अनुकम्पा थी, जो ख़ाली समय बचता, उसमें गाँव के बच्चों को और हिंदी और हिसाब (गणित) पढ़ाती, घर के अहाते में। इसके बदले में कोई बच्चा बथुआ ले आता, कोई बाजरा, कभी कोई छाछ ले आता, कोई मौसम की सब्ज़ियाँ। आराम से घर गृहस्थी का गुज़ारा चल जाता था। संतोषीपन पूरे परिवार में ही था। यों तो जीवन की आवश्यकताओं में कमी कब होती है, पर सभी रूखी सूखी खाय के ठंडा पानी पीव देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जीव को चरितार्थ करते थे।

जहाँ धनिया अपने गाँव में ही पदस्थापित रहना चाहता था, वहीं अन्य राजस्व कर्मचारी अपने ही गाँव में नहीं रहना चाहते थे। कारण कुछ ये था कि शहरी क्षेत्र में कर संग्रह अधिक होता था, राजस्व अधिकारियों की शक्तियाँ थी भी बहुत, सो सेठ-साहूकार उनकी अच्छी ख़ातिर करते थे, उनके रसूख़ बनते थे और वो उन्हें व्यक्तिगत भेंट भी अच्छी देते थे। ऐसा कुछ अपने गाँव में संभव नहीं था। व्यक्तिगत भेंट के बलबूते पर कुछ लोगों ने विभिन्न जगहों पर महँगी कोठियाँ बनवा ली थीं, घोड़े और बग्घियाँ ख़रीद लीं, बड़े-बड़े भूखंड, खेत-ख़लिहान ख़रीद लिये यद्यपि वसीके (दस्तावेज़) में नाम तो उनका नहीं होता था, पर थे वो उन्हीं के। राजदंड के भय से कर्मचारी क्या-क्या जुगत लगाता है, प्रभु जाने। उनकी घरवालियाँ भी गाँव से दूर रहने में अधिक आज़ादी महसूस करती थीं, क्योंकि वहाँ न तो किसी से घूँघट-पल्ला करना पड़ता था, न बूढ़े सास-ससुर की टोकाटाकी थी और ना ही उनकी देखभाल की कोई ज़िम्मेदारी, न मवेशियों को सानी-पानी करने का झंझट, बस, आराम ही आराम। रुतबा, पैसा, सुविधा, सैर-सपाटा सब कुछ तो वहीं था शहर में, फिर क्यों रहा जाये गाँव के बंधन और चिक-चिक में ? पुश्तैनी जायदाद

तो कहीं जाने वाली नहीं। गाँव में पड़े बूढ़े माँ-बाप उन्हें देखने के लिये बेचारे होली-दिवाली की राह तकते थे ।

इधर धनिया और जीरा मेहनत से काम करते हुए घर के बूढ़े माता-पिता की देखभाल करते रहे। कच्ची झोंपड़ी अब पक्की हो गई थी। पार साल पिताजी जाते रहे। कुरीतियों से दूर पिताजी मृत्युभोज के लिए मना कर गये थे, फिर भी लोक लाज के बीच धनिया ने एक निर्धन द्विज को तो जिमाया ही, यथाशक्ति भेंट भी दी। आस पास की वनिताएँ (स्त्रियाँ) मुँह बिचका कर हँसती रहीं।

बेचारा चार गाँव को जिमाता भी कहाँ से ?

बरसी पर गाँव के कुएँ की मुँडेर की मरम्मत पिताजी के निमित्त करवा दी और गौशाला में गायों को चारा डलवा दिया। लोगों ने बहुत बातें बनाईं। क्या सदियों की परम्पराओं को यों छोड़ना उचित है !

सब उसे कंजूस कहते, ईमानदारी पर तानाकशी करते । बिरादरी में जीरा को बिना अच्छे गहनों के अपमान भी सहना पड़ता। धनिया को ज़माने की रीत के अनुसार चलने की सीख देने की बातें कही जातीं ।

जैसे-जैसे वक़्त गुज़रा, तो अब

लोगों की उमर भी बढ़ गई, शरीर थकने लगा। जो कर्मचारी अब तक गाँव से बाहर रहना पसंद करते थे उन्हें भी गाँव अब भाने लगा था। कारण कि सेठ साहूकार भी अब सयाने हो गये थे, पहले जैसी आवभगत अब नहीं करते थे। अब व्यक्तिगत भेंट कम हो गई थी और कुछ कर्मचारियों की शिकायत पर राज्य ने उन्हें कठोर दंड भी दिया था। कुछ की नौकरी जाती रही, कुछ को कारावास में भी चक्की पीसनी पड़ी। इस सबके कारण लोगों में भय व्याप्त हो गया और अनचाही ईमानदारी उनमें आ गई थी ।

कौटिल्य ने राजस्व से जुड़े राज्य कर्मचारियों के भ्रष्टाचार की रोकथाम हेतु उनकी बदली किये जाने की व्यवस्था दी है।

अब लोगों ने धनिया के उसी गाँव में लंबे समय से नियुक्त रहने पर उँगलियाँ उठाईं। उसका रिकॉर्ड भी तलब हुआ। सिपहसालार ने देखा। राजस्व-संग्रह में कोई चूक नहीं, बेदाग़ नौकरी। हाँ दरबारी काम में अवश्य दुर्बल था, उसका कारण ये था कि दरबारी काम में लगे कर्मचारी किसी अन्य को इस काम में आगे आने ही नहीं देते थे, सो चाहते हुए भी बेचारे को इस विधा में आगे बढ़ने का मौक़ा ही नहीं मिला, वो काम में ही पिला रहा इसलिये इस धरा पर उसका कोई सरपरस्त नहीं था, सिवाय रामभक्त हनुमान जी के। हालांकि कई साल अन्य दूरदराज़ के दुर्गम निर्जन इलाक़े में वो भी नियुक्त रहा था और उसने ऊँट पर रेगिस्तान की ख़ाक़ छानी थी पर जबसे उसके पिताजी को दिमाग़ी बीमारी हुई तब से उसने उनकी सेवा के निमित्त गाँव में ही पदस्थापित किये जाने की प्रार्थना की थी, लोग तो पहले ही अपने गाँव में रहना नहीं चाहते थे इसलिये वहाँ नियुक्ति की कोई मारामारी नहीं थी, और उसके अच्छे काम और वफ़ादारी के कारण भी उसकी प्रार्थना स्वीकार हो गई। उसे लोग ज़माने के अनुसार नहीं चलने वाला समझते थे, उस पर फ़ब्तियाँ कसते थे ।

पर अब बहुत से दावेदार उसकी जड़ें खोदने लगे, बात राजा जी तक भी पहुँची। कई नियमों की दुहाई दी गई। नज़ीरें पेश की गईं। धनिया दुःखी हो गया। गाँव में नियुक्त रहने का उसका कोई दीगर उद्देश्य नहीं था, सिवाय बूढ़े माता-पिता की सेवा के। पिता का साया तो उठ ही गया था, उसकी कामना थी कि बस माँ को भी गंगा जी पहुँचा आये, इतनी सी मौहलत उसे मिल जाये। बच्चे तो समय आने पर पैरों पर खड़े हो ही जायेंगे ।

हालात अब बहुत बदल गये थे। काम की तो कोई वक़त थी ही नहीं। हर तरफ़ सिफ़ारिश, भाई-भतीजावाद और लक्ष्मी का चलन था। धनिया की कौन सुनता ? धनिया सोच में गुमसुम रहता, दिन भर उधेड़बुन में लगा रहता। तरह-तरह की आशंकाएँ उसे घेरतीं। बुरे सपने आते। वो गाँव से बाहर चला गया और रातबिरात माँ की तबियत बिगड़ी तो उसे कौन सँभालेगा ? वो तो उसकी हर साँस से वाक़िफ़ है। वैद्य जी से ज़्यादा ज्ञान उसे हो गया है उसके मर्ज़ और नुस्ख़ों का। धनिया को चिंता के कारण बीमारियाँ भी घेरने लगीं। अभी खिलाड़ीराम और डमरू भी अपने पैरों पर खड़े नहीं हुए थे, सो राज्यसेवा छोड़ी भी नहीं जा सकती थी। और कोई हुनर धनिया को आता भी नहीं था। बुआ भी अब वृद्ध हो गई थी, उसका स्वास्थ्य भी ऊँचा-नीचा ही रहता। बदन भारी था सो चलने-फिरने में भी परेशानी होने लगी थी। उसकी चिढ़चिड़ाहट झेल कर जीरा भी कुंठित हो गई थी।

तभी अचानक साँस की एक महामारी ने घेरा। गाँव देहात के लोग चट-पट मरने लगे। ग़रीब- अमीर किसी को इसने नहीं छोड़ा। हाँ ग़रीब कुछ जल्दी मरते, अमीर कुछ देर से। वैद्य, हक़ीम सब हार गये। बीमारी का इलाज करने में वो ख़ुद भी काल के गाल में समा गये। बूढ़े तो सूखे पत्तों की तरह झड़ने लगे, कई अधेड़ और युवा भी चले गये। हवा ज़हरीली सी हो गई। प्राणवायु के लिये लोग तड़पने लगे। धनिया अपनी माँ को बचाने की जुगत में लगा रहता। जीरा भी उसकी चपेट में आ चुकी थी, बड़ी मुश्किल से उसकी जान बची ।

उधर बदली की तलवार भी उसकी गर्दन पर लटक रही थी। गाँव में कार्यालय में ही पथवारी माँ का स्थान था। वो सुबह शाम ढोक देता और मन ही मन गाँव में ही बनाए रखने की प्रार्थना करता। खूँट वाले बालाजी के भी गुड़-चने चढ़ाता।

जीरा उसे ढाँढस बँधाती। मैं बैल गाड़ी हाँक लेती हूँ। माँ को रात बिरात वैद्य जी के मैं ले जाऊँगी, आप जी छोटा मत किया करो। क़िस्मत में जहाँ का अन्न जल लिखा होगा, जाना पड़ेगा। विधि का विधान है, सब कुछ अपने हाथ में नहीं होता, कुछ ईश्वर में भरोसा रक्खो। मैंने संतोषी माता के 16 शुक्रवार के व्रत भी बोल दिये हैं। प्रभु की इच्छा बिना कुछ नहीं होता। बदली होना, न होना भी उसकी इच्छा के ही अधीन है। पर धनिया का मन बदली को लेकर विचलित ही रहता।

बीमारी के हालात ऐसे, कि आदमी, आदमी को देख कर डरता। 4 लोग उठाने को नहीं मिलते थे, अंतिम संस्कार के लिये भी लम्बी क़तार। श्मशानों में लकड़ियाँ नहीं, क़ब्रिस्तानों में जगह का टोटा। इतनी बेक़द्री और आदमी का स्तर इतना गिर गया कि यहाँ पर भी रिश्वत चल रही थी !!!

धनिया को याद आया कि उसके पिताजी ने बताया था कि सालों पहले उसकी दादी भी युवावस्था में ही पिताजी को 11 महीने का छोड़ एक महामारी में ही चली गई थी। दादी को गंगाजी में जल समाधि दी गई थी। पिताजी उनके मामा के घर पले। शायद तब भी ऐसा ही मंज़र रहा होगा। लोग कहते हैं हर सौ साल में महामारी आती है।

जप-तप, टोने-टोटके, जंतर-मंतर, सब बेअसर। किसी से राहत नहीं मिली। क़ुदरत का क़हर ऐसा बरपा कि इंसान बेबस हो गया। घर से निकलना मौत को बुलावा देना लगता। इधर इंसान घरों में क़ैद, उधर नदी, झरने, ताल-तलैया सब साफ़ हो गए, निर्मल जल बहने लगा। वन्य और दूसरे जीव जंतु स्वच्छंद विचरण करने लगे।सब ईश्वर की महिमा है।

कोई कहता कि ये बीमारी विदेश से आई है, कोई कहता दुनिया पर राज करने को चीन देश के राजा ने मूठ (तांत्रिक अस्त्र) फिकवाई है। लोग कहते कि हमारे पूर्वज बहुत समझदार थे, उनकी कोई बात ग़लत नहीं थी, तभी तो हमारे पूर्वज समुद्र पार करने को मना करते थे। रोज़ नहाते थे। हमारे मसाले सब बीमारियों से लड़ने में कारगर हैं, हमें कुछ नहीं होगा।

जितने मुँह, उतनी बातें।

जनता को जागरूक करने के लिये सूबेदार जी की तरफ़ से डुग्गियाँ पिटवाई जा रही थीं। काढ़ा बाँटा जा रहा था। पास-पड़ोस के शत्रु राज्य ख़ुश भी हो रहे थे। कुछ इमदाद भी भेज रहे थे। ऐसा वक़्त न देखा न सुना। बड़े- बड़े हाकिम-हुक्मरान एक दूसरे पर मौतों और अव्यवस्था की ज़िम्मेदारी डाल रहे थे। बीमारी से निबटने का श्रेय भी ले रहे थे। बीमारी से निपटने को लेकर दरबारियों में खींचतान भी बहुत चल रही थी। चारों ओर हाहाकार मचा था। कुछ लोग इस अवसर का लाभ उठा कर चाँदी काट रहे थे। जमाख़ोरों की भी बन आई थी, औषधियों तक की कालाबाज़ारी हो रही थी। चहुँओर त्राहिमाम मचा हुआ था। भगवान ही मलिक था।

इसी बीच, बीमारी से बेफ़िक्र घर-घर पापड़, मँगौड़ियाँ बन रहे थे, अचार डाले जा रहे थे। बीमारी के इलाज के लिये भूले बिसरे नुस्ख़ों से कई तरह के चूरन-चटनी बनाये जा रहे थे, काढ़े बना कर लोग पी रहे थे। हर जना चिकित्सक बन गया था। कई नीम हक़ीम, जो मक्खियाँ मारा करते रहते थे, उनकी भी बन आई थी। पानी में सादा हल्दी डाल कर औषधि के रूप में महँगा बेचने लगे। लोग महामारी के नाम पर दान माँगने लगे। कौन जाने दान जा कहाँ रहा था, क्योंकि हालात में तो तनिक भी सुधार होता न दिखता था।

कुछ लोग सारी अव्यवस्था का ठीकरा राजा के सिर पर फोड़ रहे थे, कहते थे कि सब उसका ही किया-धरा है। कुछ कहते राजा के तपोबल से ही राज्य टिका है, ऐसे हालात में जब लगता है कि ईश्वर ही नाराज़ है, तब राजा बिचारा क्या करे? किसी के समझ में तो कुछ आता नहीं था, बस हर जना ज्ञानी बना जा रहा था और अपने उत्तरदायित्व को दूसरे पर डाल रहा था।

उधर घरों में क़ैद रहने से लोग ख़ाली थे, सो कई स्त्रियाँ उम्मीद से भी हो गईं थीं। मनोरंजन और अवसाद से उबरने का उपाय भी ज़रूरी था, बाक़ी सब सैर-सपाटे, मेले-ठेले तो बंद थे। हाँ, मदिरालय ज़रूर खुले थे क्योंकि इससे राज्य को राजस्व बहुत मिलता था, सो ऐसा माना जाता था कि यहाँ जितनी ज़्यादा भीड़ होगी उतना ही सरकारी ख़ज़ाना भरेगा और उतना ही अच्छा होगा। बीमारी से तो वैसे भी लोग मर ही रहे थे, थोड़े और सही।

बहुत से घरों में फूल खिले। कई बड़ी उमर के युगलों के यहाँ भी बधाई गान गूँजे। सालों से सास से बाँझ का ताने सुनने वाली कई वधुएँ भी अब सास के मन को भाने लगीं। ऐसे में मन चलता भी बहुत है, घरों में उनके मनपसंद व्यंजन बनने लगे। पुरुष भी ख़ुशी से मूछों पर ताव देते थे।

इस बीच हुआ ये कि बीमारी की विकरालता को देख कर सारा राजकीय अमला बीमारी का सामना करने में लगा दिया गया, बदली की बात आई-गई हो गई। धनिया ने चैन की साँस ली और मन ही मन महामारी के ख़त्म होने की प्रार्थना भी करने लगा। जीरा ने बदली की बात टल जाने को प्रभु की कृपा मान व्रत की तैयारी शुरू कर दी, तभी जीरा को भी उबकाई आई, धनिया ने जीरा की तरफ़ मुस्कुरा कर देखा।

बदली की बदली बिना बरसे ही महामारी की भेंट चढ़ गई थी।

संतान

शालिनी वर्मा, अधीक्षक, कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर

वो हमारी जायदाद या मिल्कियत नहीं,
न ही हैं हमारे सपनों को साकार करने का ज़रिया।
हमारी आकांक्षाओं, आशाओं की बेड़ियाँ पहनने की मोहताज़ नहीं,
वे हमारे कलेज़े का टुकड़ा, हमारी संतान हैं, जो कुछ कुछ हम जैसे ही हैं।
लेकिन ज़रूरी नहीं हमारे प्रतिबिंब बन जाएँ।
अगर हमारी ख्वाहिशों के फ्रेम में फिट न होते हों तो भी क्या?
वे हैं हमसे जुड़े, पर लिए हुए अलग संकल्प, अलग स्वरूप !
बँधे हैं अपने कर्मों के प्रतिफल से !
यह कतई ज़रूरी नहीं कि उनके ख्वाब हमारे सपनों से ताल्लुक रखें !
यह तो हमारा वहम है कि हमने गढ़ा है उन्हें,
बल्कि शायद गढ़े गये हैं हम उनके द्वारा,
या सब कुछ पहले से तय है नियति द्वारा।
फिर कैसा द्वंद?
स्वीकार कर लो उसे ही, जो भी आँचल में है !
दे क्या सकते हैं हम उन्हें ?
ममता की छाँव
मन का सुकून
जीने का तरीका,
घबराते दिल को एक ढाँढस
बेचैन मन को शांत पल और एक दिशा,
लेकिन बिना किसी आकांक्षा, अभिलाषा।

❑❑

तरकश

मुक्ति

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण वृत्त, अलवर

सुबह से कुल्हाड़ियां खा रहा है
ढीठ कहीं का गिरता ही नहीं
और ये कुल्हाड़ी भी कमबख़्त
मार मार कर हाथों में छाले दे रही हैं
तभी एक छींत (फांस) हत्थे से निकली
और लकड़हारे के हाथ में फंस गई
खून की धार बह निकली
बिलबिला उठा वो दर्द से
कुल्हाड़ी फेंक दी जमीन पे

टहनियों से घावों को सहलाते हुए
उस बुज़ुर्ग दरख़्त ने
कृतज्ञता से कुल्हाड़ी के हत्थे को देखा
पहचान गया उसको
उसी की शाख़ का बना था वो
बिछड़ गई थी
अंधड़ में जो एक शाम उससे
कह रहा था जैसे
अब और वार नहीं करने दूंगा बाबा
बहुत सी छींते निकाल रखी थी उसने
तरकश में तीरों जैसी
लकड़हारे की हिम्मत न पड़ रही थी
कुल्हाड़ी उठाने की
किसी तरह उंगलियों से पकड़कर
चला गया था वो वहाँ से
तरकश उठाकर

❑❑

वो दौड़ी जा रही थी
जैसे गाड़ी के ब्रेक फेल हो गए हो
लोगों ने रास्ता छोड़ दिया उसका

परिवार के ही तीन चार जने
हाथ में डंडे और मोटा रस्सा लिए
अब भी बांधने के लिए पीछे भागे चले आ रहे थे
रस्ते में दो चार को पटक भी चुकी थी
बंधन तोड़ के भागी थी
उनकी सेवा कर जीवन से थक चुकी थी शायद

तभी मंदिर की घंटियां बज उठी
मुरली की मधुर तान से वो वशीभूत हो गई
पहियों पर ब्रेक लग गए धीरे-धीरे चलते हुए
कालिंदी कूल के वट वृक्ष के नीचे,
बचपन में खेला करती थी जहां,
रुक गई

पीछे आते हुओं की हिम्मत न पड़ी अब उसे बांधने की
कान्हा के मोहपाश में बंध आई थी जो धरा पर,
गोपाल ने ढूंढ लिया था उसे

थोड़ा पानी पिया, आंखें बंद कर बैठ गई
श्याम की बंसी के संग
फिर लम्बे सफर के लिए निकल पड़ी

और डाक्टर ने वेंटीलेटर ऑफ कर दिया

❑❑

तोहफ़ा

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

आज शेखर का जन्मदिन था, मैंने सुबह उठकर जल्दी-जल्दी गाजर का हलवा बनाया और शेखर के घर की ओर रवाना हो गई। घर नहीं रिहैबिलिटेशन सेंटर। वहां पहुंचकर देखा शेखर अभी तक सो रहा था शायद दवा का असर था। मैंने उसे उठाया नहीं पास बैठकर उसके उठने का इंतजार करती रही लगभग दस बजे वह उठा। मुझे देख कर बोला, तुम कब आई? मैंने कहा, लगभग एक घंटा पहले। तो जगाया क्यों नहीं?, वह बोला। उसकी आंखें अंगारों की तरह लाल थीं। मैंने उसे जन्मदिन की बधाई दी और कहा, उठ कर हाथ मुंह धो लो, चाहो तो नहा भी सकते हो आज तुम्हारा जन्मदिन है। वह चौंका, बमुश्किल अपनी आंखें खोलते हुए बोला, तुम्हें कैसे पता? मैंने कहा, रिपोर्टर हूं सब पता कर लेती हूँ। शेखर ने उठकर जल्दी जल्दी मुंह हाथ धोया। उसकी शक्ल देख कर लग रहा था वह बहुत भूखा है। मैंने जैसे ही हलवे का डिब्बा खोला, उसके चेहरे पर एक बच्चे सी मासूमियत आई फिर उसकी आंखें कुछ ऐसे बंद हुई जैसे किसी ने सिर पर प्यार से हाथ फेर दिया हो और फिर एक मुस्कान आई और आकर चली गई अब उसके चेहरे पर जो भाव थे वह एकदम निर्लिप्तता के थे। इतने सारे भाव एक हलवे को देख कर! मैं समझ नहीं पा रही थी, पर इतना समझ गई थी कि इसके पीछे अवश्य ही कोई बात है जिसे मुझे आज ही जानना था। मैंने उसे हलवा खाने को कहा पर उसने मना कर दिया। मैंने उससे कारण पूछा पर उसने कुछ नहीं बताया। अब मैंने बात का विषय बदल कर दूसरे विषयों पर बात करनी शुरू कर दी। ऐसे ही बात करते करते मैंने कुछ चाय नाश्ता मंगाया। कुछ खाने के बाद अब शेखर थोड़ा ठीक लग रहा था। हम लगभग 2 घंटे इधर-उधर की बातें करते रहे शेखर बिल्कुल नॉर्मल हो गया था। तभी मैंने पूछा, अच्छा बताओ बचपन में तुम्हारे जन्मदिन पर मां हलवा बनाती थीं क्या?

इस अप्रत्याशित प्रश्न को सुनकर वह पहले कुछ चौंका फिर बोला, इसका जवाब देना जरूरी है क्या? मैंने कहा, हाँ वह बोला, ठीक है मैं इसका जवाब दूँगा, पर तुम मुझे क्या दोगी? मैंने कहा, हलवा दूंगी। और हम दोनों हंसने लगे, जब हंसी थमी तो शेखर बहुत गंभीर हो चला था उसने बताना चालू करा, मुझे ठीक से याद नहीं, मैं कितने साल का था पर शायद तीन चार साल का रहा होऊंगा। मॉम डैड दोनों कॉरपोरेट सेक्टर में नौकरी करते थे। ज्यादा नहीं तो कम से कम दोनों का मिला कर एक करोड़ से कम का पैकेज नहीं था। वे सुबह जल्दी ही काम पर निकल जाते और शाम को काफी रात गए आते। मुझे ठीक से पता नहीं क्योंकि जब मैं सोकर उठता तो वे जा चुके होते थे और जब सो जाता उसके बाद आते और आपस में बातें कम लड़ाई ज्यादा करते,

जिससे मेरी नींद खुल जाती। दोनों अक्सर नशे में होते थे। मैं नैनी के सहारे ही पल रहा था। धीरे-धीरे मुझे यकीन हो चला था कि नैनी ही मेरी अपनी है और मॉम डैड कोई बाहरी लोग हैं जो अक्सर रात में हमारे घर आ जाते हैं और फिज़ूल हो-हल्ला करते हैं। मैंने कई बार नैनी को कहा की वो रात में दरवाज़ा ना खोले और उन्हें ना आने दे पर ऐसा नहीं हुआ। वे लोग आते रहे, लड़ते रहे और मेरी नींद खुलती रही। उनकी लड़ाई मुझे धीरे-धीरे समझ में आने लगी थी।

और फिर एक दिन मुझ पर वज्रपात हुआ, जिस दिन उन लोगों ने यह फैसला लिया कि वे अब और साथ नहीं रहेंगे और मुझे बोर्डिंग स्कूल भेजा जाएगा। मैं बोर्डिंग स्कूल जाने को कतई तैयार नहीं था। मैं मेरी नैनी के साथ बहुत खुश था। मैंने कहा मुझे नैनी के साथ रहने दो, परंतु वे लोग फैसला कर चुके थे और जल्द ही मैं बोर्डिंग स्कूल भेजा गया। बोर्डिंग स्कूल में मेरा बिल्कुल मन नहीं लगता था। ना मुझे वहां का खाना पसंद आ रहा था। मुझे नैनी की बहुत याद आती थी। नैनी मुझसे मिलने सप्ताह में एक बार जरूर आती, जब भी आती मेरे लिए गाजर का हलवा लेकर आती। एक बार नैनी मेरे लिए गाजर का

हलवा लाई थी और मुझे खिला रही थी तभी मुझसे मिलने मेरी मॉम आईं और उन्होंने मुझे वह हलवा खाने के लिए मना कर दिया और उसे उठाकर फेंक दिया साथ ही नैनी को हिदायत दी कि वह मुझसे मिलने ना आए और ना मुझे खाने के लिए कुछ भी दे। इस प्रकार नैनी का आना जाना भी बंद हो गया। जो थोड़ा बहुत प्यार मुझे नैनी से मिलता था उसका रास्ता भी अब बंद हो चुका था। अब मैं था, मेरा हॉस्टल का कमरा था और मैस का खाना था। मॉम डैड एक निश्चित अंतराल से मुझसे मिलने आते। अपने साथ कुछ महंगे सामान लाते जिनसे मुझे कोई सरोकार ना था, अक्सर मैं वे सामान किसी ना किसी को दे देता था। यद्यपि लेने वाला अवश्य खुश हो जाता था। पैसे की मुझे कोई कमी ना थी जितना चाहूँ उतना खर्च कर सकता था। फिर मॉम और डैड दोनों ने दूसरी शादी कर ली। अब उन लोगों का आना भी शनै-शनैः बंद सा हो गया। वैसे अच्छा ही हुआ क्योंकि जब भी वे आते मैं अंदर तक आहत हो जाता था। अब उस पीड़ा से मुझे मुक्ति मिल गई थी। मुझे पता चला डैड ने किसी मध्यम वर्गीय महिला से शादी की थी, जिससे उनकी पटरी नहीं बैठ पाई और वे जल्द ही अलग हो गए। उनके एक बेटी भी हुई परंतु मैंने किसी को देखा नहीं। इधर मेरी स्कूल की पढ़ाई चल रही थी जिसमें मुझे कोई रुचि नहीं थी। एक दिन मॉम मुझसे मिलने आई उन्होंने बताया की नैनी की कैंसर से डेथ हो गई थी। मॉम के जाने के बाद मैं बहुत रोया। मुझे अपने आप को संभालना मुश्किल हो रहा था। कई दिनों तक मुझे यकीन नहीं हुआ कि नैनी अब नहीं रही। मैं डिप्रेशन में चला गया तब मेरे हॉस्टल के ही किसी दोस्त ने मुझे 1 पाउडर लाकर दिया और बताया कि उसको मुझे किस तरीके से लेना है मैंने उसे लिया और उस रात मैं कई दिनों के बाद चैन से सोया और जब उठा तो मुझे दोबारा उसकी जरूरत महसूस हुई। धीरे-धीरे यह क्रम बन गया और मैं उसे रोजाना लेने लगा। मुझे पता भी नहीं चला कि कब मैं ड्रग एडिक्ट हो गया। जानती हो पिछले साल अचानक किसी ने मुझे रक्षाबंधन पर राखी भेजी, जो मेरे लिए बहुत बड़ा अचंभा है। मैं अब तक अपनी उस राखी भेजने वाली बहन से नहीं मिला। उसने अपने पत्र में लिखा था कि वह मेरे बारे में सब कुछ जानती है और वह चाहती है कि मैं ड्रग्स लेना छोड़ दूं। क्या फिर तुम उससे मिले? नहीं, कभी नहीं। इसका मतलब तुम उसे पहचानते नहीं। नहीं, जब देखा ही नहीं तो पहचानूंगा कैसे? ठीक है चलो आज मैं तुम्हें तुम्हारी बहन से मिलवाती हूं। पर तुम कैसे जानती हो? तुम चलो तो सही, और शेखर तैयार हो गया। हम दोनों बाहर लंच के लिए गए उसने पूछा उसकी बहन कब आएगी? मैंने कहा तुम्हारे सामने बैठी है। शेखर को यकीन ही नहीं हुआ पर वह बहुत खुश था। उसने कहा, मुझे याद नहीं मुझे कभी इतनी खुशी मिली है।

मैंने पूछा, तो तुम अपने जन्मदिन पर बहन को तोहफ़े में पाकर खुश हो ना? उसने कहा, बहुत ! बहुत-बहुत खुश।

❑❑

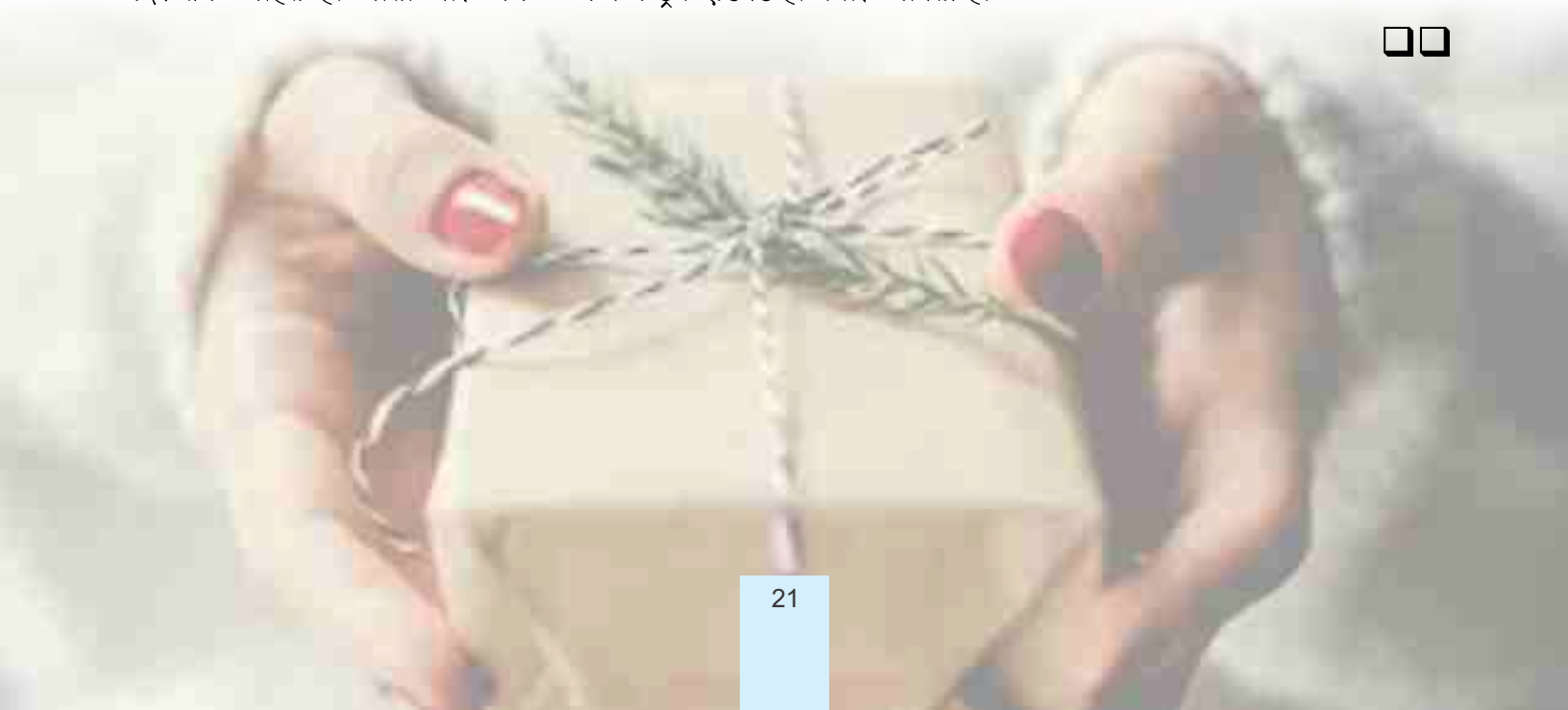

प्यारी हिन्दी

पदमाराम, क.लिपिक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर (अपील) आयुक्तालय, जोधपुर

एक भाषा जिसमें बचपन से हँसते गाते खेलते हैं, हिन्दी
एक भाषा जिसमें हम अपने जीवन के सुख-दुःख रचते हैं, हिन्दी
इक चाव है, इक लगाव है, इक बहाव है हिन्दी
एक चेतना है, एक संवेदना है, एक भाव है हिन्दी।
प्रेमचंद की वेदना है, प्रीतम का वो प्यार है,
दिनकर की वो 'उर्वशी' है, मीना की मनुहार है।
तुलसी का है 'रामचरित' वो, बच्चन की वो 'मधुशाला'
महादेवी का 'गिल्लू' है वो, टैगोर का 'काबुलीवाला'।
एक है 'पुष्प की अभिलाषा' वो ब्रह्म एक, नहीं दूजा है,
वो है कबीर की निर्गुण भक्ति, और 'राम की शक्ति-पूजा' है।
दादी-नानी के किस्से हैं, कुछ बचपन सा एक चाव है,
कुछ संस्कार की बातें हैं, कुछ अनुभव का ठहराव है।
कुछ भारतेंदु , कुछ खुसरो हैं, तो कुछ रसखान बिहारी हैं,
एक भाषा आन-बान-शान, भारत का मान, हिन्दी
राष्ट्र की भाषा, राष्ट्र की पहचान है, हिन्दी
जन-मन की भाषा है, अपनी हिन्दी पूरी सरकारी है।

❑❑

जीएसटी दिवस समारोह-2022

जीएसटी दिवस समारोह–2022

आजादी का अमृत महोत्सव
आइकोनिक वीक समारोह का आयोजन

आजादी का अमृत महोत्सव
आइकोनिक वीक समारोह के तहत नाटक का आयोजन

आजादी का अमृत महोत्सव
आइकोनिक वीक समारोह के तहत पौधारोपण

आजादी का अमृत महोत्सव आइकोनिक वीक समारोह के तहत स्लोगन तथा पेन्टिंग प्रतियोगिता

कार्यालय में आयोजित खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी

कार्यालय में आयोजित कोविड टीकाकरण शिविर

आजादी का अमृत महोत्सव 2022 : एक गौरवपूर्ण प्रयास

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, सीमा शुल्क, जोधपुर

हमारा देश भारत जनबल के हिसाब से विश्व का दूसरा, क्षेत्रफल में सातवां एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था के आधार पर पांचवा सबसे बड़ा देश है। सदियों तक विश्व गुरु और स्वर्ण चिरैया रहा, हमारा देश आपस में फूट डाल राज कर की राजनीति से त्रस्त होकर अंग्रेजों के चंगुल में फंसने के बाद, 200 वर्षों की दासता से 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुआ। स्वतंत्रता का मोल किसी मात्रक में मापा नहीं जा सकता, इसका मोल पूछना हो तो पूछो, किसी आजाद परिंदे से, यह तो अनमोल है। हमारे देश को वर्षों की गुलामी की पराकाष्ठा से बंधन मुक्त हुए अब 75 वर्ष हो गए हैं। स्वावलंबन और आत्मनिर्भर भारत के उद्देश्य के साथ आगे बढ़ते हुए, हमारे देश की स्वतंत्रता की इस 75वीं वर्षगांठ को मनाने के लिए, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में आजादी का अमृत महोत्सव का उद्घाटन किया गया, जो कि 12 मार्च 2021 से 15 अगस्त 2023 तक, कुल 75 सप्ताह तक चलेगा।

नमक पर लगाए गए लगान के विरुद्ध, महात्मा गांधी द्वारा मार्च, 1930 में नमक सत्याग्रह प्रारंभ किया गया था। गुजरात के उसी साबरमती के तट से श्री नरेंद्र मोदी ने आजादी के अमृत महोत्सव की शुरुआत दांडी यात्रा के ही समान पदयात्रा के साथ की।

यह महोत्सव ना सिर्फ आजादी के पर्व के रूप में महत्वपूर्ण है, वरन इसका महत्व इसलिए भी है कि यह एक इंसानी प्रवृत्ति है कि वह जिस विषय में अधिक सोचता और भोगता है, उसी में आसक्त हो जाता है। जैसे कि विभिन्न पर्व विशेष पर हमारे मानस पटल पर छाया हुआ, उस पर्व विशेष का उल्लास तथा उससे जुड़े हुए व्यक्तित्व, ईश्वर एवं अन्य भावनाओं का सुरूर। शायद इन्हीं भावनाओं को ध्यान में रखकर हमारे पूर्वजों ने हर रिश्ते को भावनाओं में बांधे रखने हेतु पहले से ही कुछ दिन निश्चित कर दिए थे – जैसे भाई बहन के प्यार हेतु रक्षाबंधन, छठ पूजन, भाई दूज; पति पत्नी के प्रेम के प्रतीक के रूप में तीज एवं करवा चौथ; माता पुत्र के प्रेम हेतु गौरी गणेश पूजन एवं बछड़ा बारस; गुरु हेतु गुरु पूर्णिमा एवं पूर्वजों हेतु पितृ या श्राद्ध पक्ष।

ऐसे ही हमारे देशवासियों में देश के प्रति राष्ट्र-प्रेम एवं अपने गौरव को जगाने हेतु तथा इसे आत्मनिर्भर बनाकर विश्व के सर्वोच्च शिखर तक पहुंचाने की भावना का विकास करने हेतु आजादी के अमृत महोत्सव का आगाज किया गया है। इसी के तहत चलाए गए हर घर तिरंगा अभियान में हर जाति धर्म क्षेत्र से ऊपर उठकर देशवासियों द्वारा दिखाए गए जोश एवं जज्बे से, इस अमृत उत्सव को मनाने का उद्देश्य पूर्ण होता हुआ प्रतीत हो रहा है।

आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षिक कार्यक्रम तथा खेलकूद प्रतियोगिताओं के माध्यम से हमारी युवा पीढ़ी को, हमारे स्वर्णिम इतिहास से परिचित करवाया जाएगा तथा इस स्वतंत्रता का महत्व समझाया जाएगा ताकि वे यह जान सकें कि यह स्वतंत्रता कितनी विषम परिस्थितियों से गुजर कर एवं कितने स्वतंत्रता सेनानियों की कुर्बानियों के बाद मिली है। यह कार्यक्रम ना केवल हमारे देश भारत में, वरन विश्व के अन्य देशों में रहने वाले भारतीयों द्वारा भी मनाए जाएंगे, ऐसी व्यवस्था भारत सरकार ने की है। इस महोत्सव में भारतीयों द्वारा भारतीय उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु एक अनूठी पहल भी की गई है, जिसमें हर भारतीय उत्पाद की खरीद पर फोटो खींचकर उसे लोकल फॉर वोकल के टैग के साथ सोशल मीडिया पर भेजने पर साबरमती आश्रम में रखे हुए, गांधी जी के दिए आत्मनिर्भरता के प्रतीक चरखा का पहिया एक बार घूमेगा। हम भारतीयों को अपनी इतनी सी पहल के साथ, यह चरखा उस द्रुतगति से घुमाना है, जितना विश्व की किसी भी मानव निर्मित मशीन का कोई पहिया अब तक कभी ना घूमा हो। कहने को यह बात बहुत छोटी सी

लगती है, किंतु यह एक पहल है देश हेतु कुछ करने के जज्बे की, देश को आगे बढ़ाने की भावना की। जापान और चीन जैसे देशों को आगे बढ़ाने वाली कोई अन्य शक्ति नहीं, यही राष्ट्रीयता की भावना और अपने द्वारा देश हेतु किए जाने वाला श्रमदान या अंशदान है जो उन्हें विश्व के अग्रणी देशों में लाकर खड़ा करता है। भारत इस समय विश्व की सबसे तेज गति से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है जिसके पास विश्व की सबसे बड़ी एवं सबसे युवा जन शक्ति है। यदि यह राष्ट्रप्रेम की भावना हर भारतीय दिल में निस्वार्थ भाव से घर कर ले और हम अपनी पूर्ण बौद्धिक क्षमता के साथ आगे बढ़ें तो हमारे इस देश को पुनः विश्व गुरु का पद पाने से कोई शक्ति नहीं रोक सकती।

आजादी के अमृत उत्सव के आयोजन द्वारा जहां एक ओर हमारे आज की पीढ़ी को स्वतंत्रता सेनानियों से परिचय करवाया जाएगा तो दूसरी ओर 'लोकल फॉर वोकल' को बढ़ावा देकर देश के विकास को पंख दिए जाएंगे तो, एक और हम भारतीयों को देश के पिछले 75 सालों के विकास कार्य कुशलता और ताकत की जानकारी देकर आत्म गौरव एवं आत्मविश्वास जगाया जाएगा; साथ ही हमारी युवा पीढ़ी को विभिन्न योजनाओं द्वारा स्वयं सृजन के अवसर उपलब्ध करवाकर देश की उत्पादन क्षमता में बढ़ोतरी की जाएगी। अपनी सुदृढ़ संस्कृति के साथ आर्थिक एवं सैन्य शक्ति का प्रदर्शन एवं नज़रों से नजर मिलाकर अपनी उपस्थिति का एहसास कराने के साथ, आज भारत सम्पूर्ण विश्व में अपनी स्वतंत्र पहचान बना रहा है और विश्व के अग्रणी देशों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा है ।

हमें इसी पहचान, भावना और जोश के साथ आगे बढ़ना होगा। निरसता और निराशा के तम में आशा के दीप प्रज्वलित करने का कार्य करेगा ये उल्लास। किंतु यह भागीरथी प्रयास केवल अमृत महोत्सव में जन जन की भागीदारी सुनिश्चित करने एवं जन सहयोग से ही सफल हो पाएंगे अतः इसके लिए हम सभी को इसके मूल प्रयोजन को दिल से अपना एवं आत्मसात कर, आगे आना होगा और अपने आने वाले कल को अपने बीते हुए कल से सुपरिचित करवा कर आत्म सम्मान और आत्मविश्वास जगाना होगा।

आओ देश प्रेम जगाएं
भारत को सर्वोच्च बनाएं
गौरव और स्वाभिमान जगाएं
आजादी का अमृतोत्सव मनाएं
क्योंकि
यह उत्सव है
आजादी के 75 वर्षों का
आओ विश्व को एहसास दिला दें
भारतवर्ष के उत्कर्षों का।।

भारत माता की जय ।।

❑❑

मुस्कान

अरविन्द कुमार शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

अब होंठों पर मुस्कान, हंसी आ जाने दो जरा,
आपके फूल से सुंदर चेहरे को खिल भी जाने दो जरा।

ताने मारना, मुंह फुलाना, गुस्सा करना अधिकार है आपका,
पर मुस्कुराना, हंसना, खिलखिलाना भी अधिकार है आपका।
इस फूल से सुंदर चेहरे पर मुस्कुराहट आने भी दो जरा।

विवाह से सेवानिवृत्ति तक आपकी मुस्कान का रहा इंतजार है,
हम जवां थे जब, अब बच्चे जवां हो गये हैं,
इसी बात पर बच्चों की खुशी की खातिर, मुस्कुरा भी दो जरा।

हो जाने दो दिल में गुदगुदी का अहसास आज,
इस तन्हा दिल की मांग तो सिर्फ आपकी मुस्कान का तोहफा ही है।

देखो अपने होंठों को यूँ दाँतों से न चबाओ,
अब आने दो मुस्कान को चेहरे पर होंठों से बाहर,
देखो मुस्कान आहिस्ता से होंठों पर दस्तक दे रही है।

आपकी फुलझड़ी सी मुस्कान को निकलने दो बाहर आज,
हमारी खुशी का आगाज आपकी मुस्कान से ही होगा आज।
इन्हीं ख्यालों में खुशी से भरा सवेरा होगा आज।

सभी मित्रों के जीवन में रोज ऐसा ही सवेरा हो,
इसी आशा में मेरे सभी मित्र मुस्कराते रहें सदा।
सभी साथियों को दिल से नमस्कार।

❑❑

डिजिटल डीटोक्स - आज की आवश्यकता

अरुण भटनागर, अधीक्षक, सी.जी.एस.टी. आयुक्तालय, उदयपुर

प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धांत यह साबित करते हैं कि रोग का कारण गलत रहन-सहन और गलत भोजन है एवं इनमें सुधार के बिना रोगों से नहीं बचा जा सकता है। रोग जिन कारणों से पैदा होते हैं, उन कारणों को दूर करना ही रोग से मुक्ति पाने का सही रास्ता है। गलत आदतें रोग के कारण-रूप हैं तो सही आदतें उनके निवारण के तरीके हैं। यह समझने के लिए बहुत वैज्ञानिक दिमाग की जरूरत नहीं हैं।

आज के युग में टेक्नोलॉजी और डिजिटल सेवाओं या गजेट्स के बिना जिंदगी की कल्पना करना बहुत मुश्किल है। अस्सी के दशक में भारत में टेलीविज़न का दौर प्रारम्भ हुआ था और लोग एक-दो चैनल्स वो भी कुछ सीमित समय के लिए देख कर अपने आप को धन्य समझते थे। धीरे-धीरे चैनल्स एवं समय बढ़ता गया और उसके साथ-साथ लोगों का स्क्रीन टाइम भी बढ़ता गया। एक समय आया जब किसी के घर जाने पर बातचीत का स्थान टीवी पर आने वाले धारावाहिक की कहानियों ने ले लिया। यह हमारे डिजिटल दुनिया या कहें स्क्रीन की दुनिया का प्रारंभिक दौर था।

इसके बाद हमारे जीवन में कंप्यूटर का आगमन हुआ जो धीरे-धीरे कब आवश्यकता में बदल गया पता ही नहीं चला। आज की जीवन शैली में कंप्यूटर / लैपटॉप के बिना जिंदगी की कल्पना करना भी मुश्किल है। आज किसी भी कार्यालय, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम में कार्य कंप्यूटर पर होता मिलेगा। कोरोना ने तो और भी वर्क फ्रॉम होम का चलन ला दिया है जिससे आज के युवाओं का अधिकतम समय स्क्रीन के सामने बीतने लगा है। कंप्यूटर के साथ ही इन्टरनेट ने भी हमारी डिजिटल लाइफ को बदल दिया है ।

टीवी, कंप्यूटर, इन्टरनेट के साथ साथ मोबाइल ने तो जैसे हमारे जीवन को पूरी तरह बदल दिया है। आज की पीढ़ी के युवा एवं बच्चे तो शायद यह भी नहीं समझ पाएंगे कि इन सभी उपकरणों के बिना भी जिन्दगी संभव है। मोबाइल के आने से जो संचार क्रांति आयी वो इन्टरनेट एवं स्मार्ट फ़ोन के आने से जीवन-क्रांति में तब्दील हो गयी।

आज ऑनलाइन पेमेंट, ऑनलाइन शॉपिंग, वर्क फ्रॉम होम एवं ज्यादातर अन्य काम ऑनलाइन होने की वजह से, टेक्नोलॉजी की अहमियत हमारी जिन्दगी में अब और बढ़ गयी है। लोग अब अपना अधिकतम समय ऑनलाइन या कहें स्क्रीन के समक्ष बिताते हैं। ओ.टी.टी. पर सीरीज, मूवीज आने एवं उनको मोबाइल पर देखने की सुविधा के बाद तो हमारा स्क्रीन टाइम बहुत ही ज्यादा बढ़ गया है। आजकल लोग अपने सामाजिक रिश्तों से ज्यादा अहमियत फेसबुक, लिंक्दीन, यू-ट्यूब या ट्विटर पर मिले लाइक्स एवं फोलोवेर्स को देते हैं।

आज हालत यह है कि फ्रेंड्स, रिश्तेदार, कपल्स आदि फ़ोन या सोशल मीडिया पर चैटिंग तो खूब करते हैं, लेकिन वो उतनी ही सहजता से आमने-सामने बैठकर बात नहीं कर पाते हैं। हम स्मार्ट-फ़ोन के जरिये सूचना तो शेयर करते हैं, लेकिन असल में इससे रिश्ते में मधुरता धीरे-धीरे कम होती जा रही है। फेसबुक पर लंबी फ्रेंड-लिस्ट, ट्विटर पर फोलोवेर्स की संख्या भले शान की बात हो सकती है, लेकिन सुरक्षा के लिहाज से भी यह ठीक नहीं है। सोशल मीडिया के माध्यम से हम कई अनजान लोगों से भी जुड़ जाते हैं जिससे अपनी पर्सनल लाइफ में जो कुछ भी कर रहें हैं वो भी अनजान लोगों को मालूम रहता है। उसमें से कुछ ऐसे हैं जिनके लिए सही गलत के कोई मायने नहीं होते एवं पैसे के लिए वह कुछ भी कर सकते हैं। अतः ऑनलाइन जानकारी का दुरूपयोग कर ये किसी भी प्रकार से आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

आज हालात ऐसे हैं कि मोबाइल, लैपटॉप जैसे गैजेट्स से घिरे रहने के चलते लोगों में एक तरह की बेचैनी है और ऑफिशियल ईमेल, सोशल मीडिया अपडेट के तनाव का असर रिश्तों पर पड़ रहा है। इस वर्चुअल वर्ल्ड के चलते हम अपनी आसपास की दुनिया से दूर

हो रहे हैं। अधिकतर लोग रात को सोने से पहले आखिरी काम और सुबह उठने पर पहला काम अपना मोबाइल चेक करने का करते हैं। स्मार्टफोन का उपयोग आज की आवश्यकता है लेकिन इसका बेजा उपयोग अधिकतर लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी में एक व्यवधान के तौर पर भी देखा जाता है। बहुत समय तक मोबाइल फोन के स्क्रीन का इस्तेमाल अनिद्रा की समस्या पैदा कर सकता है। तकनीक से घिरे होने के चलते याददाश्त पर भी असर पड़ता है। यही वजह है कि तेजी से डिजिटल में बदलती दुनिया में स्वास्थ्य को लेकर भी बातें शुरू हुई हैं। दिमाग के लिए एक समय में कई चीज़ों पर फोकस करना संभव नहीं है। इससे ब्रेन पर नेगेटिव असर होता है। मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से तनाव, अकेलापन और उदासी जैसे भावनात्मक समस्याएं बढ़ रही हैं।

इन समस्याओं का हल बनकर सामने आया है 'डिजिटल डिटॉक्स'। सुनने में यह भले अजीब लगे, लेकिन टेक्नोलॉजी से घिरे लोगों के लिए यह एक बेहद अहम थैरेपी बनती जा रही है। इसका मतलब है खुद को डिजिटल दुनिया से दूर करना। लोग खुद को कुछ घंटों, दिनों या महीने तक अपने स्मार्टफोन और इंटरनेट से दूरी बनाने का टारगेट सेट करते हैं। जिस तरह शराब, सिगरेट की लत लगती है, लोगों को उसी तरह वर्चुअल वर्ल्ड में भी रहने की लत हो जाती है और वो चाहकर भी इससे निकल नहीं पाते हैं। ऐसे में तकनीक के मायाजाल से खुद को दूर रखने के लिए कुछ समय के लिए डिजिटल छुट्टी पर जाने को ही 'डिजिटल डिटॉक्स' कहते हैं। इस छुट्टी में लोग मोबाइल, इंटरनेट व तकनीक से दूर रहते हैं। अब तो दुनियाभर में कई टूर एंड ट्रेवल्स कंपनियां ऐसे कैम्प लगा रही हैं, जहां लोगों को तकनीक से दूर रखा जाता है।

इसमें लोग अपने फोन, कम्प्यूटर और अन्य गैजेट्स से कुछ समय के लिए दूरी बनाते हैं। जिससे ऑनलाइन रहने और सोशल मीडिया के बहुत अधिक इस्तेमाल से बचना आसान होता है। डिजिटल डिटॉक्स को मानसिक सेहत बूस्ट करने, तनाव से राहत पाने और सकारात्मक महसूस करने के लिए उपयोगी माना जाता है। डिजिटल डीटॉक्स के माध्यम से लोगों को मुख्यतया निम्न फायेदे होते हैं –

1. तनाव, अकेलापन और उदासी जैसी भावनात्मक समस्याएं कम होती हैं।
2. पर्सनल, सामाजिक एवं फैमिली लाइफ बेहतर होती है ।
3. स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ता है – नेत्र का शुष्क होना, सिर दर्द, गर्दन दर्द, अनिद्रा आदि बीमारियों मे राहत मिलती है ।
4. अपने आवश्यक कार्य चाहे वो पेशे से सम्बंधित हो या पारिवारिक हों, दोनों के लिए अधिक समय मिलता है ।

डिजिटल डीटॉक्स के सबसे अच्छे परिणाम पाने के लिए बेहतर रास्ता यही है कि व्यक्ति अपनी आदतों में सुधार करे एवं डिजिटल एडीक्शन से अपने–आप को बचाए । यदि व्यक्ति अपनी रोजमर्रा में कुछ समय निर्धारित कर ले कि वह उस समय मे किसी भी डिजिटल उपकरण का ख़ास तौर पर मोबाइल स्क्रीन का उपयोग नहीं करेगा तो उसे लम्बे डीटॉक्स की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। इसके लिए रात्रि आठ–नौ बजे से लेकर प्रातः आठ–नौ बजे तक मोबाइल एवं टीवी स्क्रीन से दूरी बनाना बहुत ही कारगर उपाय साबित हो सकता है। इसके अलावा उपवास की तरह ही सप्ताह में एक या दो दिन अपने आप को डिजिटल उपकरणों से दूर रखना भी कुछ हद तक मदद कर सकता है ।

कंप्यूटर, मोबाइल, टीवी आदि डिजिटल गैजेट्स हमारी सुविधा के लिए है, पर इनके अत्यधिक उपयोग से व्यक्ति इनकी लत में फंसता चला जा रहा है एवं उसकी जिंदगी में इनका गलत प्रभाव पड़ता है इसलिए हमें सोच समझ कर ही इन सबका आवश्यक कार्य हेतु ही उपयोग करना चाहिए।

❑❑

मेरा भाई

रचना सुधीर शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

एक पेड़ था, मजबूत.... फलदार.... छायादार
फलता - फूलता परिवार
चार शाख थीं.... झूमती ..... निष्फिक्र..... लहलहाती
समग्र था संसार.....
आंधी आई..... एक शाख झड़ गई,
अधूरा सा हुआ संचार
प्रहार हुआ .... और पेड़ उठते-उठते गिर गया ....
फीकी पड़ी बहार
संसार चल पड़ा अपनी चाल.....
एक शाख में हो चली फिर तरु की ढाल.....
तभी तूफान आया ..... ले गया तरु को
जड़ सहित उखाड़.....
ले गया जिंदगी भी अपने साथ.....
संसार को चला साँस विहीन ..... नीरस .....सूना .....
वीराना..... उदास
मै पंछी बनी बैठी हूँ अभी भी
उस तरु की शाख पर....
जी रही हूँ इस ही आस पर....
तक रही हूँ अपने द्वार पर....
भाई मेरा आएगा..... सारे गम मिटाएगा....
भाई मेरा आएगा....
भाई मेरा आएगा.....

❑❑

बचपन सुख और हम

निखिल भारद्वाज, भाई श्रीमती नीता शुक्ला, वरिष्ठ अनुवादक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

बचपन में सभी बच्चे एक जैसे ही होते हैं। चाहे वो अमीर घर में पैदा हुए हों या फिर किसी गरीब घर में शहर में या फिर किसी गाँव में।

सभी की लगभग एक जैसी ही जरूरतें होती हैं, चाहे खाने-पीने की वस्तुएं हों या खेलने सम्बंधित वस्तुएं, हां ये जरूर हो सकता है कि शहर का बच्चा पिज्जा बर्गर मांगे और गाँव का पनपथी रोटी। सही मायने में हमारा बचपन ही सुखमय होता है, क्योंकि उस समय हमारी कोई और जरूरत नहीं होती जैसे कि किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था में होती है।

कैसे ?

बचपन में सुख कैसा था? ना धन था, ना पद था, ना प्रतिष्ठा थी और ना ही कोई सम्मान देता था..... और शायद ना ही इस सब की आवश्यकता थी।

कदाचित सुख और दुख हमारे दिमाग में होते हैं।

क्योंकि .....

बचपन में सुख था
तितलियों के पीछे भागने में
पुराने टायर को चलाने में
कागज की नौका बनाने में
होली के रंगों को बिखरने में
चोरी छिपे कच्चे आम खाने में
ट्यूबवेल पर घंटों नहाने में
बिना किसी परवाह किए दबा के खाने में
रात में बेवजह टॉर्च को व्योम की तरफ प्रज्ज्वलित करने में
मृदा से भवन निर्माण करने में
सदन में उपलब्ध मशीनरी से छेड़छाड़ करने में

बचपन सच में बड़ा ही निराला होता है, जो की सुख दुःख से परिपूर्ण होता हैं, परन्तु उस समय हमारी ख्वाहिश होती है की हम कब बड़े होंगे और वो जीवन कब जियेंगे जो हमारे बड़े जी रहे हैं।

किन्तु यदि हम सुख की बात करें तो क्या ऐसे सुख की हम कल्पना जवानी में कर सकते हैं? जवाब कदाचित ना ही होगा।

पतंग उड़ाने में भी अलग ही सुख की अनुभूति थी, पता नहीं उसमें कौन सी किरण नजर आती थी, वो बरसात की कीचड़ में खेलने में कौन से पोषक तत्व मिलते थे, मुश्किल से ही कोई दिन जाये जब बड़ों की डांट खाए बिना रहे, तब उस डांट का ना तो कोई दर्द होता था ना ही कोई मलाल।

परन्तु अब जब भी कोई डांट देता है तो हम अन्दर ही अन्दर घुटने लगते हैं। इसलिए क्योंकि सुख और दुख सब हमारे दिमाग में होते हैं। हाँ वो पल वापस नहीं ला सकते परन्तु जैसे हम बचपन में किसी भी बात को गंभीरता से नहीं लेते थे उसी तरह आज भी कर सकते हैं और धन, लालच, मोह त्याग आदि सब से बचकर अपने समय को सुखमय बना सकते हैं।

विचारणीय तथ्यों को ही समय दें, क्योंकि समय निकल रहा है..... जैसे बचपन निकल गया, ऐसे ही जीवन के बाकी पड़ाव..... जवानी और बुढ़ापा भी निकल जाएंगे।

धनोपार्जन तथा धनोभोग सुख नहीं हैं। सुख भी महसूस ही किया जा सकता हैं जैसे तितलियों के पीछे भागने में महसूस हुआ करता था।

सभी के सुख की कामना करता हूँ।

❑❑

अर्ध सत्य

मंजूर अली अंसारी, आयुक्त (in-situ), केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

बाहर से कुछ और अंदर से कुछ और है वह
जितना दिखता है कहीं उससे अधिक नहीं दिखता

रौब से कुर्सी पर बैठा देता आदेश
पर जितना ऊंचा आसीन है उतना ही अकेला
ना जाने कितने जहर का घूंट पी
बन बैठा विषैला निर्लिप्त जीव
पर क्या उसका यह पूर्ण सत्य है?
या है उसका यह केवल अर्ध सत्य?

गगनचुंबी इमारतों का वह पहरेदार
मूछें ऊंची कर दिखता वह रौबदार
रोकते हुए लंगड़े भीख मंगे को डांटता
पर प्रवेश करती साहब की चमकती कार
देख झट देता सेल्यूट उसे बार-बार
पर क्या उसका यह पूर्ण सत्य है?
या है उसका यह केवल अर्धसत्य?

सी.ई.ओ. मैम है मल्टीनेशनल कंपनी की
टारगेट ओरिएंटेड, डेडीकेशन मूल मंत्र है उनका
लक्ष्य पाने के क्रम में कभी माथे पर बल डालती
कॉफी एवं अन्य पेय पदार्थ को लेते हुए
कभी गहरी लंबी सांसें छोड़ती
कभी ऑफिस एवं लैपटॉप पर सर फोड़ती
मोबाइल की रिंग बेल एवं घड़ी की सुइयों पर
नजर रखते कभी चौंकती कभी झुनझुलाती
फिर सरपट लंबी गाड़ी में बैठ भागती है
पर क्या उसका यह पूर्ण सत्य है?
या है उसका केवल अर्धसत्य?

रिसेप्शन (स्वागत कक्ष) पर बैठी युवती
विनम्र भाव से स्वागत में वह मुस्कुराती
चेहरे के मेकअप में भाव भंगिमा छुपाती
मे आई हेल्प यू? का वह रट्टा लगाती
असहज स्थिति में भी सहज सी दिखती
पर क्या उसका या पूर्ण सत्य है?
या उसका यह केवल अर्ध सत्य है?

दीर्घता में लघुता और लघुत्व में दीर्घत्व
दिखना एवं दिखाना
पूर्ण सत्य नहीं अपितु
वर्तमान काल खंड का अर्ध सत्य है ।।

❑❑

क्यों लिखें हम

शालिनी वर्मा, अधीक्षक, कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर

क्या आप जानते हैं कि तनाव, दुख, मानसिक अवसाद को ख़त्म करने का बहुत प्रभावी समाधान है, मन की बात को कागज पर उतारना।

जब सबसे अधिक परेशानी का सामना कर रहे हों तो कागज-क़लम लेकर बैठें और जो भी विचार या भावनाओं का गुबार, चाहे वो ऊल-जलूल ही क्यों न हों, बस लिखते जाएँ क्रोध की सारी हदें उस कागज पर उतार दें, किसी को अपशब्द भी कहने हों तो उन्हें भी लिखें, आँसू आ रहें हों तो टपकने दें उस कागज के टुकड़े पर। लिखते-लिखते कुछ पलों में ही मन की भड़ास कम होने लगेगी और हमारी शब्दावली संयत तथा लिखने की गति धीमी होती जाएगी। स्वत: ही हमारा चित्त और दिमाग़ शांत होता जाएगा, अब उस कागज को कहीं रख दें या नष्ट कर दें।

यदि हम कुछ दिन बाद कागज पर उतारी अपनी भावनाएँ और विचारों पर नज़र डालें तो पाएँगे कि उस समय जितना विषाद या अवसाद हमारे चित्त ने महसूस किया था, वह मुद्दा उतना गंभीर नहीं था और हम खांख़्वाह ही परेशान हो रहे थे। अब ठंडे दिमाग़ से उन समस्याओं का समाधान करना भी आसान होगा। संभव है कि अगली दफ़ा उसी प्रकार की स्थिति आने पर हम बेहतर तरीके से उससे निपटने में सक्षम हों।

कुछ लोगों का कहना है कि उन्हें इस तरह लिखना नहीं आता। उनके लिए मशविरा है कि केवल कुछ पंक्तियों से हम इस आदत की शुरुआत कर सकते हैं जैसे 'मैं फलाँ व्यक्ति को नापसंद करता हूँ', 'यह दुनिया मेरे विरुद्ध है', 'मैं निहायत बेवकूफ़ / सीधा हूँ' आदि आदि। धीरे-धीरे हम लिखने के अभ्यस्त होते जाएँगे।

इस पूरी प्रक्रिया के पीछे एक वैज्ञानिक आधार है - शोध कहते हैं कि जब हम क्रोध या दुख के आवेग में होते हैं, हमारे मस्तिष्क का एक हिस्सा (ईमिग्डाला) ज़्यादा क्रियाशील होता है। और जब हम अपनी भावनाओं को शब्दों में ढालने लगते हैं, हमारे मस्तिष्काग्र की बाह्य परत (Prefrontal cortex) अधिक क्रियाशील होती है जो हमें शांत करने में सहायक होती है। यह घटना उसी तरह है जैसे ट्रैफिक सिग्नल पर पीली रोशनी देखकर हमारा पैर स्वत: ही ब्रेक पर चला जाता है। वर्तमान समय की इस बड़ी समस्या को साधने के अतिरिक्त इस एक छोटी सी आदत से हमारी रोजमर्रा की जीवनशैली में कई लाभ स्वत: ही जुड़ते जाएँगे, जिनमें प्रमुख हैं :

- डिम्नेशीया व अल्जाइमर्स को दूर रखने में सहायक।
- स्वयं का आंकलन करने की शक्ति के साथ बेहतर व्यक्तित्व का विकास होना।

- पिछली ग़लतियों से सीख लेना और समाधान ढूँढने में सहायक होना।
- बिना किसी को हानि पहुँचाए या बात को इधर- उधर होने के बजाए मन को हल्का करने का प्रभावी तरीका।
- अकेलापन दूर करने में सहायक।
- धीरे - धीरे भाषा पर पकड़ बनना।

हममे से कोई भी संपूर्ण नहीं है, कोई न कोई कमी हम में रहती ही है, लेकिन अपने दिल की बात खुलकर न हम किसी से साझा कर सकते हैं और न ही वर्तमान परिस्थितियों में हर बात साझा करना उचित ही है, अतएव कृत्रिम मुखौटे पहने हुए हम प्राय: अपना जीवन घुटन में ही व्यतीत करने को बाध्य होते हैं। अपने मन की बात लिखना हमारे लिए संभवत: प्रेशर वाल्व का काम करेगा।

एक कोशिश तो करके देखिए।

❑❑

इमली

वो तन्हा दरख़्त

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण वृत्त, अलवर

पहचानता हूँ
'उसे'
मेरे बाग के आमों को
खट्टा कहा था, 'उसने'
कैरियों के मुह बिचक गए थे, तबसे
उसकी बातों से मुंह में पानी भर आया था
डिम्पल पड़े हंसते हैं
गालों पर 'उसके'

'इमली' है नाम उसका

लहराती फिरती है
खानाबदोश सी
कभी खेलती टेसू की बहार से
कभी पोखर किनारे
खेत की मेढों पर सुस्ताती
मिल जाती है कभी

क्यों, क्या हुआ

नहीं, कुछ नहीं

सुना है गांव छोड़कर
चली गई है

❑❑

वो तन्हा दरख़्त
दूर तलक उस मुसाफिर को जाते हुए देखता रहा
अभी अभी उसकी नर्म छाव से उठकर गया था वो
कि पलटकर देखेगा आंखों से शुक्रिया कहकर
फिर आने का वादा करेगा हाथ हिलाकर
एक टांग पर खड़े रहकर
कड़ी धूप पीकर जितनी भी बन सकी
थोड़ी सी ठंडी छाव मेहमान को परोसी थी उसने

उसके जाने वाले कदमों की आहट
मद्धम होते होते शांत हो गई
परछाई भी उसकी अब कहीं दिखती न थी

महीनों तक उस नाशुक्रे का ख्याल
परेशान करता रहा उसे

लोगों की आवाज़ों से आज
अचानक नींद खुली उसकी

इसी पेड़ का जिक्र किया था ना साहब ने
हाँ, इसके अलावा यहाँ कुछ और है कहा
इसी को सेंटर मे रख चबूतरा बनाकर
चारों ओर कालोनी का पार्क डेवलप करना है

फिर जैसे उसके कानों पर ताले पड़ गए
आँखें छलक आई थी ममता से उसकी
भूला हुआ बेटा जैसे घर ले आया था उसको
बूंदों से बचाने के लिए
ओट में ले लिए थे मज़ूर उसने

❑❑

ये राणा की नगरी हैं

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

हर प्रस्तर पर लिखा हुआ है,
जैसे उनका नाम।

गूँज रही है, गाथा शौर्य की
जैसे आठों याम।

ऊँचे नीचे सड़क रास्ते
मानों हों जैसे बतलाते
उनके जीवन के संघर्ष

मातृ भूमि के लिये भिड़े वो
उनसे, जो थे लड़ाके दुर्धर्ष

करते रहेंगे प्रेरित सदैव
उनके जीवन के संघर्ष,

क्या कभी बन पाएंगे हम
उनके चरणधूलि सम रज भर !!

कठिन कितना रहा होगा
उनके लिये वो जीवन

नहीं रह पाते भूखे हम तो
मात्र एक भी दिन

वो रोटी घास की कैसे
खाता होगा बचपन हर दिन

त्याग याद दिलाता है उनका,
यहाँ की मिट्टी का कण-कण

नहीं झुका वो शीश,
किसी ताज के आगे

चुना उसने वो मार्ग
जो था कठिन,
किन्तु था काल से आगे

करते हैं बातें स्वतन्त्रता की
हम तो अब

और मनाते धूमधाम से
स्वतंत्रता दिवस प्रतिवर्ष

किन्तु

राणा तो थे
स्वतंत्रता के दीवाने
पंच-शती पूर्व

उस जज़्बे को
लेश मात्र भी
नहीं सकता कोई छू।

❑❑

मेरा कौन बनेगा करोड़पति का सफर

सौजन्य से श्रीमती रचना सुधीर शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

29 अगस्त, 2022 सुधीर शर्मा, अधीक्षक के लिए खास था। इस दिन वो KBC (कौन बनेगा करोड़पति) में BIG B (अमिताभ बच्चन) के सामने हॉट सीट पर बैठे थे। साल 2014 से इसकी तैयारी में वो जुटे थे। जयपुर से KBC तक का सफर कैसा रहा, इसकी तैयारी किस तरह की....ऐसे तमाम पहलुओं पर इस सफर की कहानी पढ़िए सुधीर जी की जुबानी...

मैं (सुधीर शर्मा) सुपरिटेंडेंट पद पर सीजीएसटी, कस्टम्स, सेंट्रल एक्साइज और सर्विस टैक्स डिपार्टमेंट में हूं। वर्तमान में मेरी तैनाती जैसलमेर में है। इससे पहले जयपुर में थी। KBC में जाने के लिए पिछले 12 साल से तैयारी कर रहा था। 2014 में मौका भी मिला था। फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट में मुझसे तेज दो बच्चे थे। वह आगे रहे और उसके बाद फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट नहीं हुआ। ऐसे में मुझे वापस आना पड़ा। इसके बाद मैंने ठान लिया था कि एक दिन वापस KBC में जाना है और अमिताभ बच्चन जी के सामने हॉट सीट पर बैठना है।

मुझे अखबार पढ़ने का शौक शुरू से रहा है। नई-नई चीजों के बारे में जानने का बहुत शौक है। उसी से मेरी तैयारी हो गई। रोज न्यूज पेपर पढ़ने के अलावा वर्तमान में चल रही घटनाओं को लेकर सजग रहता था। चाहे वो विदेश में हो रही हों, या अपने देश में। इसका भी मुझे फायदा मिला।

फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट में साथ के बाकि 10 कंटेस्टेंट सारे युवा थे। नई पीढ़ी की गैजेट्स पर स्पीड अच्छी होती है, इसलिए मैं काफी नर्वस था। इस बार पैटर्न बदलने के कारण हर कंटेस्टेंट को तीन प्रश्नों का उत्तर देना था। इन तीनों प्रश्नों का सही व फास्टेस्ट जवाब देकर मैं फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट में प्रथम स्थान पर रहा और हॉट सीट पर पहुंचा। मैंने तीनों सवालों का सबसे जल्दी जवाब दिया था।

अमिताभ बच्चन साहब एक बेहतरीन इंसान और लाजवाब पर्सनैलिटी हैं। मैं उनका बहुत बड़ा फैन हूँ। बॉलीवुड के शहंशाह ने गले लगाकर शो में मेरा वेलकम किया, इस पल को मैं कभी नहीं भुला सकता, मैं अभिभूत हूँ भाव विह्वल हूँ उनके इस gesture से। अमिताभ जी के लिए शेर अर्ज करना चाहूंगा- 'यूं तो लोग खामोश खड़े रहते हैं, फिर भी जो लोग बड़े होते हैं, वह बड़े होते हैं, ऐसे दरवेशों से मिलता है हमारा शिगरा, जिनके जूतों में भी ताज पड़े रहते हैं।'

हॉट सीट पर बैठकर काफी टेंशन होती है। कंटेस्टेट के प्रेशर को BIG B

अपनी बातों से गायब कर देते हैं। उन्होंने मजाक में कहा था – जनाब आप यहाँ कौन बनेगा करोड़पति खेलने आये हैं...यहां रेड मत डालिएगा।

सेट पर मुझे ऐसा लगा.. मानो, बॉलीवुड के BIG B मेरी एक घंटे की debut फिल्म के हीरो थे और मैं एक न्यूकमर एक्टर....फिल्म में मेरे दो छोटे-छोटे गाने भी थे, जिसमें से एक उनका गाना 'बड़ी सूनी सूनी है....ज़िन्दगी ये ज़िन्दगी' था। ये मूवी लांच हुई 29 अगस्त, 2022 रात 9 बजे KBC के मंच पर। BIG B से मिलकर बहुत प्रभावित हूँ। उस दिन मेरा सबसे बड़ा सपना पूरा हुआ था।

अमिताभ जी ने मेरे कार्य क्षेत्र के बारे में दिलचस्पी दिखाई एवं जानना चाहा कि किस तरह से मैं अपने कार्य को अंजाम देता हूँ। मैंने उन्हें बताया कि कस्टम्स, सीजीएसटी, सेंट्रल एक्साइज और सर्विस टैक्स डिपार्टमेंट में पिछले लगभग 30 सालों में जितने भी केस मैंने बुक किए, उसमें करोड़ों रुपए जब्त किए गए हैं। एयरपोर्ट पर लोगों के हाव-भाव देखकर हमें पता चल जाता है कि वह किसी गलत मकसद से आए हैं। इस मामले में मैं बहुत लकी हूँ कि मैंने आज तक किसी बेगुनाह को नहीं बल्कि सारे गलत काम करने वालों को ही पकड़ा है। 2020 में दो अलग-अलग फ्लाइट से लाए गए 32 किलो अवैध सोने को भी पकड़ा था, जिसके बारे में KBC पर चर्चा हुई थी। मैंने उन्हें यह भी बताया कि जयपुर में सबसे ज्यादा अवैध सोना, ड्रग्स, फ्लोरा-फौना और करेंसी लाया जाता है। इन चीजों को लाने के लिए लोग अपने शरीर का इस्तेमाल करते हैं। अपने रेक्टम में सोना छुपा लाते हैं और महिलाएं अपने अंडर गारमेंट्स में चीजें छुपा कर लाती हैं। अब तो पेस्ट के फॉर्म में सोना ला रहे हैं, जो पकड़ने में बहुत ही मुश्किल है। फिर भी इस तरह के कई केस हम लोगों ने पकड़े हैं।

इस प्रकार अमिताभ जी के साथ बातचीत करते करते एपिसोड का शूट पूरा हुआ। मैंने शो से 3 लाख 20 हजार रुपए जीते। 12 लाख 60 हजार के प्रश्न तक खेला था। 12वें प्रश्न – 2022 फीफा विश्व कप के संदर्भ में, 'अल रिहला' क्या है का गलत उत्तर देकर शो से बाहर हो गया था। अफसोस है कि ज्यादा रकम नहीं जीत पाया, मगर अपने साथ उम्रभर ना भूल पाने वाली मस्तक पटल पर अंकित छवि व कुछ अनमोल यादों का रेला संजो के ले आया हूँ।

❑❑

पिता - एक हमसाया

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, सीमा शुल्क, जोधपुर

कभी कभी होते हैं सख्त तपिश
कभी होते हैं छाया
वह सिर्फ पिता नहीं
होते हैं हमसाया

कभी घना तरुवर बन
खुद सहारा करते हैं
कभी धूप भीनी ये बन
शीत भगाया करते हैं
तो कभी बन बदली कोई
जल बरसाया करते हैं
वह सिर्फ सख्ती नहीं
सीख, संबल और होते हैं माया
वह सिर्फ पिता नहीं, होते हैं हमसाया।।

कभी वह बन गए थे सीढ़ी
कभी कंधों के ऊपर बिठाया
कभी पकड़कर छोटी सी उंगली
धरती पर चलना सिखाया
कभी हर छोटी बड़ी चोट पर
मलहम भी है लगाया
तो कभी बच्चों की सिसकियों में
अपनी आंखों को छलकाया
कभी आई हर उलझन को
अपने अनुभव से सुलझाया
कभी मां की भूमिका निभाते
कभी होते हैं छाया
वह सिर्फ पिता नहीं, होते हैं हमसाया।।

कभी नुकीली नसीहतें चुभाई
कभी अपना क्रोध बरपाया
कभी दुलार तो कभी डराकर
हर मुश्किल से लड़ना सिखाया
कभी बने हर प्रहार पर ढाल वो
कभी तन्हा छोड़
आत्मविश्वास बढ़ाया
कभी हर गलती को माफ कर
सीने से है लगाया
कभी आई उलझन को
अपने अनुभव से है सुलझाया
छूटी हुई आरजू पर मेरी
रोते हैं मेरे नुमायां
वह सिर्फ पिता नहीं, होते हैं हमसाया ।।

पेड़ नहीं खाता है
तो देता है फल
पिता ने भूखे प्यासे रहकर
शुद्ध भोजन हमें खिलाया
ओढ कर सादगी की चादर
हर खिलौना हमें दिलाया
स्वयं पथरीली जमीन पर सोए
पर बच्चों के बिछौना बिछाया
तो कभी मेहनत का राशन बन
मां का रसोईघर महकाया
मेरे जीवन को सफल बनाने
खुद ऊपर वाला है नीचे आया
मेरी हर तमन्ना पूरी करने
ईश्वर ढोते हैं नश्वर काया
वह सिर्फ पिता नहीं, होते हैं हमसाया।।

टूट टूट, बनाया जीवन जो
सह सह, संवारा उपवन जो
डूब डूब, भरी सांसो में पवन जो
जल जल, दहकाई है अगन जो
जीवंत प्रयास की, जगाई है लगन जो
एक शून्य को देकर अंश
बनाए हुए अपने ही गगन को
संतान क्या खुद ईश्वर भी
नहीं होने देते हैं जाया,
जिनके लिए रोते हैं खुद खुदाया,
साथ सदा होते हैं अपने नुमायां,
बनते हैं रिमझिम फुहार वो
खुद झुलसा कर अपनी काया
वो सिर्फ पिता नहीं, होते हैं हमसाया।।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (का.-1) जयपुर द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने पर ''क'' वर्ग
में सांत्वना द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री जे.पी.मीना,
अपर आयुक्त, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

''ख'' वर्ग
में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री उमेश गर्ग, संयुक्त आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

हिंदी दिवस समारोह 2022
एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन,
सूरत में सुश्री अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग
के साथ सीजीएसटी, जयपुर के राजभाषा अधिकारी

राजभाषा पखवाड़ा 2021 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2021-22 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने पर प्रदत्त राजभाषा शील्ड

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर संभाग-एफ, जयपुर को प्रदत्त
राजभाषा शील्ड प्राप्त करती हुई
सुश्री निष्ठा शर्मा, उपायुक्त

सीमा शुल्क संभाग, बीकानेर को प्रदत्त
राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए
श्री जे.पी.मीना, अपर आयुक्त

सीमा शुल्क, निवारक शाखा (मु.), जयपुर को
प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए
श्री जयनारायण मीना, मूल्य निरूपक

सीमा शुल्क, वेतन एवं लेखा शाखा (मु.),
जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए
श्री अजय पाण्डेय, प्रशासनिक अधिकारी

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर द्वारा प्रदत्त हिंदी डिक्टेशन/ टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2021-22 प्रमाण-पत्र वितरण

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2021-22 प्रमाण-पत्र वितरण

सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2021-22 प्रमाण-पत्र वितरण

जीते वही जो, हँसते गाते जीते चले गये

हेमन्त शर्मा, निरीक्षक, सीमा शुल्क, आयुक्तालय, जयपुर

जीते वही जो, हँसते गाते जीते चले गये।
जैसे भी ढाला जिन्दगी ने ढलते चले गये।।

हर मोड़ है नया यहाँ जो भी रहा गुजर।
फूल, शूल सब राह में मिलते चले गये।।

रंगों के खेल, रिश्तों के मेल और क्या यहाँ।
मिलते गये कभी, कभी बिछुड़ते चले गये।।

लोगों ने और लम्हों ने हर पल सिखाया है।
जो भी मिला सबक यहाँ पढ़ते चले गये।।

ये मिला, वो रह गया ये सिलसिला रहा।
लम्हों के पालने में यूँ ही पलते चले गये।।

हैं आज, कल नहीं फिर जी ले आज ही।
मोम से हम रोज ही पिघलते चले गये।।

जीते वही जो, हँसते गाते जीते चले गये।
जैसे भी ढाला जिन्दगी ने ढलते चले गये।।

❑❑

होरा ज्ञात करने का नियम

(होरा किस प्रकार से ज्ञात किया जाता है और किस काम के लिए प्रयोग में लाते हैं)

अजय पाण्डेय, प्रशासनिक अधिकारी (डी.डी.ओ.), सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

हम कभी-कभी ऐसे कार्यों को करने के लिए प्रेरित होते हैं जो कार्य हमें जिस दिन नहीं करने चाहिए और हमें मना कर दिया जाता है। जैसे कि बाल कब कटवायें, लोहे का व्यापार कब करना चाहिए (कुछ लोग कहते हैं कि शनिवार के दिन नहीं करना चाहिए और कुछ लोग कहते हैं कि शनिवार के दिन नहीं करना चाहिए)। अतः इस बात को ज्ञात करना आवश्यक है कि हम होरा काल में भी इन कार्यों को कर सकते हैं।

होरा ज्ञात करने के लिए यह बात जानना आवश्यक है कि होरा प्रत्येक 1 घंटे ही चलती है। इसको जानने के लिए जैसे 24 घण्टे में 24 होरा होती है। सूर्योदय से ही होरा प्रारम्भ हो जाती है और दिन निकलने तक होरा रहती है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है।

माना कि आज रविवार है। तो जैसे ही सूर्योदय होगा तो सबसे पहली होरा सूर्य की ही होगी। उसके बाद उससे छठी या उससे पीछे कर लें, तो आगे बढ़ायेंगे तो भी शुक्रवार आयेगा व पीछे करने पर भी शुक्रवार ही आयेगा। अब शुक्रवार से दो पीछे करेंगे तो बुध की ..... (बार-2 2 पीछे करेंगे) जैसे

रविवार ⟶ रविवार ⟶ शुक्र ⟶ बुध ⟶ सोम

होरा जो होती है, वह सूर्योदय के बाद जो दिन है, उसी दिन की होरा 1 घण्टे तक रहती है। उसके बाद दो पीछे कर देते हैं।

होरा सारिणी (क्षणवार जानने का चक्र)

वार	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.	हो.
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
रवि.	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु
चन्द्र	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु
मंगल	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु
बुध	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श
गुरु	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	रा	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र
शुक्र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं
शनि	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं

राहुकाल ज्ञात करने का नियम

सूर्योदय होने के 1.30 घण्टे बाद तक राहुकाल नहीं होता। (अगर 6 बजे सुबह सूर्योदय होता है तो सुबह 7.30 बजे तक राहूकाल नहीं होगा किसी भी हालत में)

राहुकाल ज्ञात करने का सरल सूत्र :

Mother	Saw	Father	Wearing	The	Turban	Sunday
M से सोम	S से शनि	F से शुक्र	W से बुध	T से गुरु	T से मंगल	S से रवि
7.30 से	9.00 से	10.30 से	12.00 PM से	1.30 PM से	3.00 PM से	4.30 PM से
9.00	10.30	12.00	1.30 PM	3.00 PM	4.30 PM	6.00 PM

यदि यह याद कर लें कि (Short Film)

Mother Saw Father Wearing The Turban Sunday

इससे राहुकाल याद रखना आसान हो जायेगा। उपरोक्त सारणी में दर्शाये गये समय के दौरान राहूकाल रहेगा।

राहुकाल ज्ञानाय चक्र

रविवार	सायं	16.30 (04.30 PM)	से	18.00 (06.00 PM)	बजे तक
चन्द्र	प्रातः	07.30	से	09.00	बजे तक
मंगल	दिवा	15.00 (03.00 PM)	से	16.30 (04.30 PM)	बजे तक
बुध	दिवा	12.00 (12.00 PM)	से	13.30 (01.30 PM)	बजे तक
गुरु	दिवा	13.30 (01.30 PM)	से	15.00 (03.00 PM)	बजे तक
शुक्र	दिवा	10.30 AM	से	12.00 AM	बजे तक
शनि	प्रातः	09.00 AM	से	10.30AM	बजे तक

बिना पंचांग की सहायता से चौघड़िया मुहूर्त अब खुद बनाना सीखें

चौघड़िया ज्ञात करने का नियम

1 2 3 4 5 6 7

उद्वेगश्चामृतो रोगो लाभ शुभ चरौ मृति (मृत्यु/काल)

रवि सोम मंगल बुध गुरु शुक्र शनि

चौघड़िया सीखने के लिए रविवार से शुरू करते हैं।

रविवार को सबसे पहली चौघड़िया उद्वेग की होगी।

सोमवार को प्रातःकाल अमृत की होगी।

मंगलवार को प्रातःकाल रोग की होगी।

बुधवार को प्रातःकाल लाभ की होगी।

गुरुवार को प्रातःकाल शुभ की होगी।

शुक्रवार को प्रातःकाल चर की होगी।

शनिवार को प्रातःकाल मृति (मृत्यु/काल) की होगी।

चौघड़िया का समय 1.30 घण्टे का होता है।

अब रविवार को अगली चौघड़िया निकालने के लिए उद्वेग से 6 आगे चर की होगी। या उद्वेग से दो पीछे चलें तो भी चर की होगी। अर्थात् :-

रविवार के दिन का चौघड़िया

उद्वेग → चर → लाभ → अमृत → काल → शुभ → रोग → उद्वेग

अर्थात् दिन को चौघड़िया निकालते समय अपने से छठा/पीछे से दूसरा लें।

जबकि

रात्रि में चौघड़िया निकालते समय अपने से पाँचवा/पीछे से तीसरा लें।

लेकिन यहाँ एक बात और ध्यान रखनी होगी कि रविवार को दिन का चौघड़िया निकालते समय पहला चौघड़िया उद्वेग का निकला, दूसरा चौघड़िया चर का, तीसरा चौघड़िया लाभ का, चौथा चौघड़िया अमृत का निकला, पाँचवा चौघड़िया काल का निकला, छठा शुभ का निकला, सातवां चौघड़िया रोग का निकला और आठवां चौघड़िया उद्वेग का निकला।

तो रविवार को दिन की अन्तिम चौघड़िया (आठवीं) जो कि उद्वेग की थी, तो हमें रात्रि की चौघड़िया निकालने के लिए उद्वेग से ही चलना होगा।

रविवार को रात का चौघड़िया

शुभ → अमृत → चर → रोग → काल → लाभ → उद्वेग → शुभ

शुभ कार्य और यात्रा के लिए कोई मुहुर्त न बनने पर उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य करें।

उत्तम चौघड़िया : अमृत, शुभ, लाभ तथा चर हैं।

खराब चौघड़िया : उद्वेग, रोग व काल हैं।

चौघड़िया सारणी

	दिन का चौघड़िया							समय बजे तक	रात का चौघड़िया						
	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	दिन–रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहला	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरा	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरा	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथा	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पाँचवा	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठा	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवाँ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवाँ	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

सशक्त : अबला

सुश्री चारू सक्सेना, पत्नी श्री प्रकाश सक्सेना, अधीक्षक, सी.सी.ओ., जयपुर

अबला है नारी तू
कह कह कर
तुमने उसको कमजोर बनाया है.....
जो जग के पालन हार को जन्म दे
कैसे मान लूं वो अबला है.....
जो क्रोधित मुनि के श्राप से
पाषाण बन जाए
कैसे मान लूं वो अबला है.....
जो अपने जिगर के टुकड़े को
शेरों से खेलना सिखलाए
कैसे मान लूं वो अबला है.....
जो पति संग वनवास में
पथरीली राहों पे चले
कैसे मान लूं वो अबला है.....
सिर्फ इसलिए
कि ये तूने कहा है.....
तो हे! पुरुष, तुम भी सुन लो
सब कुछ चुपचाप सहती हूँ मैं
क्योंकि घर तुम्हारा बना रहे
तिल तिल अपमान सहा इसलिए कि
मान तुम्हारा टिका रहे
वरना.....
खप्पर उठा कर हाथों में
काली मैं भी बन सकती थी
खड़ग के प्रहार से महिषासुर
मर्दन मैं कर सकती थी
पर.....
मैंने गौरी बनाना स्वीकार किया
सृष्टि के निर्माण को,
मैंने चुना सती का पथ
तेरे ही तो मान को
हे पुरुष
अब तू भी सुन.....
मुझको अबला कहना छोड़ दे
अब मैं वो नहीं जो.....
मेहँदी लगा अपने हाथों
तुझे सुरक्षा मांगूंगी.....
खुद उठा त्रिशूल अब
सीने में भोंक कर
अपनी लाज बचा लूंगी
क्योंकि मैं जान गई हूँ
तू मुझको फिर फुसलाएगा
बातों में खूब उलझाएगा.....
पर अब ये न हो पायेगा
अब मैं खुद ही राम बन
रावण को मार गिराऊंगी
और खुद ही कृष्ण बन
अपनी लाज बचा लूंगी।

❑❑

मित्रों

अरविन्द कुमार शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

कभी तो हमको भी घर पर बुलाया करो,
बुला कर सोफे पर हम को भी साथ बिठाया करो।
चाय-वाय पिलाया करो, कचोड़ी पकोड़ी खिलाया करो।
कभी तो हमारी भी मन की बात सुन लिया करो।
हम भी मित्र हैं आपके, कभी तो दोस्ती निभाया करो।
हमारे गिले शिकवे कभी तो सुन लिया करो।
कभी तो हमको भी.....

हम आपके हैं, आप हमारे हो, यह कभी तो जताया करो।
आपके साथ से ही सब कुछ अच्छा होता है।
यह मान भी लिया करो।
कभी तो हमको भी .....

कोई नाराजगी मन में है भी तो चाय पिला कर भुला दिया करो।
हमें भी घर बुलाया करो, बुलाया करो मित्रों
भाईयों चाय-वाय पिलाया करो।
कभी तो हमको भी.....

कोई भी इसे दिल पर सीरीयस न लेना
पर मित्रों, घर पर कभी तो बुलाया करो।

मेरा वतन

ऐ मेरे वतन के लोगों, मेरी ये बात दिल से लगा लो।
ईर्ष्या, द्वेष को मन से हटा दो।
सभी देशवासी भाई बहन की तरह मिल जुल कर रहना सीख लो।
वतन के अनमोल खून को व्यर्थ सड़क पर न बहाना।
यह खून विदेशों में कहीं भी नहीं मिलेगा।
बहाना है तो खेत खलिहानों में काम कर पसीना बहाओ।
कल कारखाने कभी न रोकना क्योंकि ,
है उन्नति के शिखर पर हमको जाना और रोशन राष्ट्र का नाम करना है।
श्रम, सत्य और ज्ञान का शंखनाद विश्व में कर
भारत की शान बढ़ाने का हर काम हमें करना है।
असंभव को संभव करने को सत्य अहिंसा की राह पर हमें चलना है।
महात्मा गांधी के आदर्शों को अपना कर भारतवर्ष को फिर से विश्व गुरु बनाना है।
ऐ मेरे वतन के लोगों यह बात दिल में अच्छी तरह से समझ लो।

आत्मनिर्भर भारत - उन्नति की ओर बढ़ते कदम

(हिंदी पखवाड़ा 2021 के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

दयानंद राहड़, अधीक्षक, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

यह प्रकृति का नियम है कि प्रत्येक प्राणी आत्म निर्भर बनना चाहता है। आत्म निर्भर का अर्थ है किसी दूसरे के भरोसे रहने के बजाय स्वयं पर निर्भर रहना अर्थात् स्वावलंबन।

हमारा भारत वर्ष प्राचीनकाल से ही आत्मनिर्भर रहा है। कालांतर में विदेशी यहाँ आए और अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। अंग्रेजों ने हमारे देश पर लगभग दो सौ वर्षों तक शासन किया। अपने स्वयं के उद्योग-धंधे पनपाने के चक्कर में हमारे कुटीर उद्योगों को येन-केन-प्रकारेण बंद कर दिया। नतीजा यह हुआ कि हम सुई जैसे छोटे से उपकरणों के लिए भी आयात पर निर्भर हो गये। लॉर्ड कर्जन ने वर्ष 1905 में बंगाल विभाजन किया जिसके विरोध स्वरूप स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई। विदेशी सामान, नौकरियों, पदवियों का हमारे लोगों के द्वारा त्याग किया गया। गाँधीजी के चरखे व करघे ने तो कमाल कर दिया।

लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व पूरा विश्व कोरोना नामक महामारी की चपेट में आ गया जिसके फलस्वरूप विदेशों से आयात व निर्यात बहुत बुरी तरह से प्रभावित हुआ। हमारे देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी ने आपदा की नजाकत को देखते हुए 'लोकल फॉर वोकल' का नारा दिया जिसका अर्थ है लोकल सामान का प्रयोग करना एवं उसका प्रचार-प्रसार करना। इसका द्रुतगामी परिणाम यह हुआ कि इस महामारी से लड़ने के लिए कोविड-19 का वैक्सीन हमारे देश में ही निर्माण शुरू किया गया। इस वैक्सीन को देशवासियों को लगाने के अलावा जरूरतमंद देशों को निर्यात भी किया गया। नतीजतन भारत की छवि विश्व पटल पर एक विकसित राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत हुई।

कुछ वर्षों पूर्व हम लोग अपने देश में विमान निर्माण की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। यह आत्म निर्भर भारत का ही करिश्मा है कि ''तेजस'' जैसे स्वदेशी निर्मित लड़ाकू विमानों को आसमान में कलाबाजियाँ करते हुए देखकर हम स्वयं भी आसमान में उड़ान भरने लगते हैं। स्वदेश निर्मित टैंक की गर्जना से शत्रु थर्रा जाते हैं। अत्याधुनिक तकनीक से निर्मित 'बुलैट ट्रैन' ने स्वदेशी को आगे बढ़ाते हुए हमारी यात्रा को अत्यंत सुगम एवं द्रुतगामी बना दिया है।

भारत सरकार ने ''आत्म-निर्भर'' भारत को बढ़ावा देने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी है। युवाओं को ''स्टार्ट-अप'' शुरू करने के लिए अत्यन्त आसान शर्तों पर वित्तीय सहायता एवं प्रचुर मात्रा में सब्सिडी उपलब्ध करवाई जा रही है। परिणामस्वरूप हमारे ''युवा एंटरप्रन्योर'' नये-नये स्वदेशी व्यापार स्थापना करने में किसी से कम नहीं है। कोविड-19 की महामारी स्वरूप उद्योग-धंधे एवं व्यापार ठप्प हो गये थे जिनमें पुनः जान फूंकने हेतु हमारी सरकार ने कई तरह के वित्तीय पैकेज दिये हैं। इसके फलस्वरूप व्यापार पुनः पटरी पर आ रहा है।

उन्नति अथवा प्रगति का साधारण - सा मतलब है कि अगला कदम पिछले कदम से बेहतर हो। ''आत्म-निर्भर भारत'' की परिकल्पना के परिणाम साकार होने शुरू हो गए हैं। आज के युग आई.आई.टी. एवं एम.बी.ए. की परीक्षाएँ पास कर स्वयं के ''स्टार्ट-अप'' व्यवसाय को परम्परागत नौकरियों के मुकाबले अधिक तरजीह दे रहे हैं। इसका सीधा लाभ हमारे देश को यह हुआ है कि अब हमारी प्रतिभाओं का पलायन कम हो गया है।

हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था क्योंकि हम बहुत समृद्धिशाली थे। विदेशी आक्रांताओं ने हमें खूब लूटा और हमारी अकूत संपत्ति लेकर चले गये। आज हमारा राष्ट्र जिस सोच के साथ स्वदेशी पर बल दे रहा है उसके परिणाम स्वरूप हमारे उद्योग-धंधे बहुत तेजी से पनप रहे हैं तथा हमारा आयात-निर्यात का संतुलन ठीक हो रहा है। विदेशी मुद्रा का नित्य प्रतिदिन बढ़ता

हुआ भंडार इस बात का साफ संकेत है कि हम प्रगति के पथ पर उभरती हुई अर्थव्यवस्था हैं। इस हेतु भारत सरकार ने पाँच ट्रिलियन डॉलर की इकोनोमी का लक्ष्य रखा है जिसको हासिल करने हेतु यथासंभव कार्य किया जा रहा है।

हमें याद है कि भारतवर्ष खाद्यान्न के मामले में भी विदेशों पर निर्भर था। यह सरकार की दूरदर्शी नीतियों एवं हरित क्रांति का ही परिणाम है कि न केवल हम देशवासियों का पेट भरने में सक्षम हैं बल्कि खाद्यान्न का निर्यात भी किया जा रहा है। दूध उत्पादन के मामले में श्वेत क्रांति अपने आप में बड़ी क्रांति रही है। सड़क व रेल यातायात में आशातीत प्रगति हुई है। रोज बढ़ती हुए सड़कें एवं विश्व स्तर के हाईवे, द्रुतगामी रेल, स्मार्ट टेलीफोन जो भी प्रयोग किये जा रहे हैं, दूरसंचार का अनूठा उदाहरण है। प्रत्येक घर को बिजली कनेक्शन, स्वच्छ पेयजल कनेक्शन, प्रत्येक गाँव व ढाणियों को सड़कों से जोड़ना यह सब हमारे राष्ट्र की प्रगति का ही सूचक हैं।

वैसे देखें तो हमने बहुत सारे क्षेत्रों में आत्म निर्भरता प्राप्त कर ली है परन्तु अभी भी कुछ मामलों में हमें और अधिक कार्य करने की नितांत आवश्यकता है। कृषि में दलहन व तिलहन के उत्पादन में आज भी हम मांग के मुकाबले आपूर्ति में पीछे है जिसके कारण हमें यह सब विदेशों से आयात करना पड़ता है और हमारी बहुत सारी विदेशी मुद्रा खर्च हो जाती है। पैट्रोल व डीजल का भी अधिकांश हिस्सा हम आयात ही करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी काफी मात्रा में आयात हो रहे हैं। मेडिकल के उपकरण इत्यादि भी विदेशों से ही आ रहे हैं।

जिस प्रकार हरित क्रांति ने खाद्यान्न के मामले में देश को आत्म-निर्भर बनाया था, उसी प्रकार की एक क्रांति तिलहन व दलहन उत्पादन के लिए की जानी चाहिए। पैट्रोल व डीजल पर निर्भरता कम करके इलेक्ट्रिक वाहनों का निर्माण बढ़ाना चाहिए एवं इनके इस्तेमाल पर सब्सिडी दी जानी चाहिए। तकनीक का अधिक से अधिक स्वदेशीकरण करना चाहिए। हमें वस्तुओं की गुणवत्ता पर भी जोर देना चाहिए ताकि देशवासियों का विदेशी सामन से मोह भंग हो।

सरकार इसी प्रकार 'लोकल फॉर वोकल' के लिए काम करती रहेगी तो गाँधी के इस देश में चरखे व करघे की तर्ज पर काम करते हुए वह दिन दूर नहीं जब भारत पुनः स्वदेशी के रास्ते पर अग्रसर होकर विश्व गुरु बनेगा तथा विश्व का सिरमोर होगा और पुनः सोने की चिड़िया कहलायेगा।

'जय हिंद - जय भारत'

❑❑

शुक्रवार

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

शाम शुक्रवार की
शुरूआत सप्ताहांत की
पोस्टिंग बाहर की
रहती कोशिश पहुँचने की
घर जल्दी से जल्दी

तीव्रतम साधन से
दुपहर की ट्रेन से
बस से, फ़्लाइट से

रहती है ताक कि
मिल जाए अवसर
दुपहर में निकलने का
न आये कोई पंगा
जो बिगाड़ दे कार्यक्रम
और डाल दे कोई अड़ंगा

आसानी से मिल जाये छुट्टी
रहती है ये एंग्ज़ायटी
दुख भी जाता है सिर
इससे कभी-कभी

होती है थकान,
उम्र के हिसाब से
रहती है ख़ुशी भी
उम्र के हिसाब से

नव विवाहित की ख़ुशी
तो होती है सबसे बढ़के
करेंगे बातें ढेर सारी
जा कर के घर पे

करती हैं इंतज़ार
ज़िम्मेदारियाँ भी सप्ताह से
होता है उदास भी मन
अकेलेपन से

खुल जाती है आँख,
पिछली रात
नींद न आने से

रहता है शुक्रवार का इंतज़ार,
सोमवार ही से

कितना सुखद अहसास है
इन्तज़ार का ये

शुक्र है कि आता है
शुक्रवार हर बार

वरना
होती कितनी मुश्किल,
सहम जाते हैं,
सोच कर ये।

लगता है शुक्रवार
अच्छा रविवार से

क्योंकि

पड़ता है लौटना रविवार को
घर से दूर फिर से।

जबकि

लाता है शुक्रवार
दूर से पास घर के
लगा देता है पंख
मन मयूर में ख़ुशी के।

❑❑

कोरोना कहर-19

पदमाराम, क.लिपिक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर (अपील) आयुक्तालय, जोधपुर

सोचकर चीकलेना, देखकर खाँचना है।
हाथ जोड कर विनती है। कोरोना कहर है।
उल्टी दस्त, सर्दी, जुकाम, खाँसी, लक्ष्ण
साधारण से कोरोना कहर है।

कैसी माहामारी फैली परदेशी पावणो से,
मेला वेला, शादी वादी मिलना -
जुलना सब कुछ बंद है।
शेयर धडाम गिरे, सोना चॉदी चिक्के पडे,
सस्ता माल मँहगा पड़ा चाइना से

हीरो भूले हिरोगिरी डोन भूले दादागिरी,
भोपा भूले झाड़ फूँक कोरोना कहर है।
बनिया व्यापारी मन्दा छुट गया काम धन्धा
बिगड़े हालात सब कोरोना कहर से।

दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार हो रहे है।
भयानक महामारी आफत अनूठी आयी
संकट सरकारो पे कोरोना असर है।

जनता सारी दुःख भूली, नेता सारे सुख भूले,
इधर-उधर वाली बातें भूली नारियाँ
सरकारी अधिकारी खाना-पीना भूल गये।
कोरोना को वापस भगाने की तैयारियाँ है।

मर्ज ऐसा फैल गया दवा का प्रबंध नहीं है।
रखो सब सावधानी कोरोना कहर है।
चाइना की कोई चीज कब तक टिकती हैं या
सब्र करो थोड़े दिन मौसमी असर है।

संसद मे नेता जन सकल मुद्दों को भूल गये।
बात सब कोरोना की कोरोना कहर है।
गाँव-ढाणी बात चली, चौपालें सभी बंद है।

रेल और बसें सब बंद हैं।
भेदभाव भूलकर सभी लोग सेवा करें।
महामारी किसी भी विश्व युद्व से क्या कम है।

अभिनेत्रियाँ भी सारी घर पर भली बैठी
सारी शूटिंग रद्द की कोरोना के डर से
पर्दे की महारानी पर्दा करके बैठी,

बिना पर्दे के सब घर से न निकले,
तिनके से तन पे मामूली वस्त्र पहनती जो-2
चले अब बजारों में पूरा तन ढक के,
मेकअप भूल गयी, ब्रेकअप भूल गई,
हीरो संग Date भूली कोरोना कहर से

आँखों देखी सच्ची कहूँ कानो सूनी झूठी कहूँ
आपातकाल में डॉक्टर भगवान है।
शक्ल संसार में वह मानव महान है।

जान-पहचान अनजान और जान से भी-2
दूरी रखो 3 फीट पास नही जाना है।
घर पर बने वो भोजन ग्रहण करो।
घर से निकलने का कोई न बहाना है।

हादसों की अनदेखी जानबूझ मत करो।
घर बैठ-काम करो कही नहीं जाना है।
कुछ दिन धैर्य रखो सब कुछ ठीक होगा।
एक दिन कोरोना को देश से भगाना है।

बिना जरूरत के अब घर से ना निकलना ।
एक साथ ज्यादा जने एकत्रित नहीं होना है।
दिखे कभी ऐसा रोगी दूर रहो दूर रखो।
बार-बार साबुन एवं सेंनेटाइजर से हाथ धोना है।

मास्क से मुँह ढंकना बाहरी स्वाद ना चखना है।
त्यागो चीजें बाजारों की कोरोना को धोना है।
रखो सारी सावधानी कुछ नहीं बिगड़ने देना है।
जग हम जीत लेगे कोरोना का रोना है।

वाह रे कुदरत तेरा भी क्या खूब हिसाब है।
सारे इंसान कैद में है एवं सारे जानवर आजाद है।

शाखाओं अगर रही तो पत्ते भी आएगें।
ये दिन बुरे है, तो अच्छे भी आएगें।

उत्तरी सिक्किम - धरती का स्वर्ग - यात्रा संस्मरण

राजेश पारीक, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील आयुक्तालय, जयपुर

इस बार ग्रीष्मावकाश में हमने पूर्वोत्तर भारत में सिक्किम जाने का निर्णय किया। इस यात्रा में मेरे साथ मेरी पत्नी सीमा तथा पुत्र ईशान थे, जिनके अद्भुत साथ की वजह से ही यह यात्रा कार्यक्रम बना तथा सफलता पूर्वक आनंद के साथ पूर्ण भी हुआ। सिक्किम एक बड़ा पर्यटन केन्द्र है तथा यहां की यात्रा का अनुभव अपने आप में अलौकिक अनुभव रहा। यहां की मेरी यात्रा दस दिन की रही तथा गंगटोक, उत्तरी सिक्किम (लाचेन व लाचुंग), पेलिंग तथा दार्जिलिंग भ्रमण के रोमांच से भर देने वाले किस्सों में से उत्तरी सिक्किम की यात्रा के अनुभव मैं पाठकों के साथ साझा कर रहा हूं।

प्रथम दिन – गंगटोक में होटल में नाश्ते में परांठें खाने के उपरांत हम पुनः अपने कमरे में आ गये। आज का दिन हमारे लिये रोमांच से भरा हुआ था, आखिरकार अब हमारी उत्तरी सिक्किम की यात्रा जो प्रारम्भ हो रही थी। उत्तरी सिक्किम अपनी प्राकृतिक सुन्दरता तथा झरनों के लिये विश्वविख्यात है। यहां से सभी स्थलों की ऊंचाई भी बढ़नी प्रारम्भ हो जाती है तथा स्वास्थ्य के लिहाज से सावधानी बरतना आवश्यक हो जाता है।

इन्तजार करते-करते 10.30-11.00 बज गये परन्तु किसी वाहन के आने की सूचना प्राप्त नहीं हुई। ऐसे मैं मैंने अपने एजेन्ट को फोन किया तो पता चला की जिस गाड़ी को उसने हमें उत्तरी सिक्किम घुमाने के लिये रखा था, वह गाड़ी टायरों की समस्या के चलते नहीं आ पा रही है अतः वह दूसरी गाड़ी की व्यवस्था कर रहा है। इस सबमें 12.00-12.15 का समय हो गया और अंततः हम गाड़ी आने के उपरान्त लाचेन के लिये निकल पड़े।

लाचेन 9200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है तथा उत्तरी सिक्किम का छोटा सा कस्बा है लाचेन का अर्थ है 'बड़ा दर्रा'। ये गंगटोक से लगभग 129 किमी दूर और 2750 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां आते समय रास्ते में कई सारे झरने तथा तिस्ता नदी के मनोरम दृश्य देखने को मिलते हैं, जिनका पूरे रास्ते हमने आनन्द लिया। गंगटोक से निकलने के कुछ देर बाद ही हमें एक जगह पर पर्यटकों की भीड़ व गाड़ियां आदि दिखाई दीं और तभी वाहन चालक ने गाड़ी रोकते हुए कहा कि यह लाचेन के सबसे बड़े झरनों में से एक **सेवन सिस्टर्स वाटरफॉल** है। जैसा कि नाम से ही समझ आता है कि सेवन सिस्टर्स वाटरफॉल में सात अलग-अलग झरने शामिल हैं जो एक विस्तृत बीहड़ चट्टान पर आजू-बाजू स्थित हैं, जो दूर से देखने में बहुत अलग-अलग दिखाई देते हैं। यह वॉटरफॉल गंगटोक-लाचुंग राजमार्ग पर गंगटोक से 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और बारिश के नहीं होने के बावजूद यह झरना बहुत सुंदर दिखाई दे रहा था यहां सभी पर्यटक अपने फोटोशूट करने में लगे हुए थे, हमने भी झरने के साथ अपने फोटो लिये और फिर अगले स्थान के लिए आगे की ओर

चल दिये। रास्ते में हमें एक शानदार पुल नजर आया वाहन चालक ने बताया कि यह – **रेंग– रेंग ब्रिज** है। हमने देखा कि सड़क के किनारे पेड़ों पर ऑर्किड के सफेद फूल लदे थे। दुनिया के सबसे ऊंचे पुलों में से एक पुल, जो कि मध्य उत्तर सिक्किम, में मंगन मार्ग पर है, यह पुल एशिया का दूसरा सबसे ऊंचा सस्पेंशन ब्रिज है जो कि उच्च और सुदूर हिमालय में इंजीनियरिंग का एक शानदार चमत्कार है । इस पुल पर भी बौद्ध धर्म से जुड़े रंग-बिरंगे झण्ड़ों की कतारें लगी हुई थीं। पूछने पर वाहन चालक ने बताया कि अलग-अलग कारणों से बौद्ध धर्म के मानने वाले ये झण्डे लगाते हैं और इन विभिन्न अलग- अलग कारणों की वजह से इनकी संख्या कहीं 11, 21 तो कहीं 108 तक भी हो सकती है। इन झण्डों तथा रंगीन झण्डियों के कारण पूरा पुल तथा रास्ता अत्यन्त सुन्दर लग रहा था तथा वहां से नीचे निगाह डालने पर बहती हुई तिस्ता नदी का बहाव अत्यन्त आकर्षक लग रहा था, नदी का जल पत्थरों से टकराकर सफेद झाग बनाता हुआ बहता हुआ चला जा रहा था तथा सभी का मन मोह रहा था।

सिंघिक – सिंघिक गांव मंगन से करीब 12 किमी दूर है। 500 फीट से भी ज्यादा ऊंचाई पर स्थित इस गांव का महत्व यहां से कंचनजंगा की दृश्यता के चलते हैं। यहां ट्रेकिंग के लिये झंडी व्यू प्वाइंट और तोषा झील ट्रैक भी लोकप्रिय है परन्तु हमारा ट्रेकिंग का कोई कार्यक्रम नहीं था अतः हमने इस बारे में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई । इसके अलावा पारंपरिक लेप्चा घर और ऐतिहासिक सिंघिक मठ भी देखने को मिले। यहां पहुंचते ही हमारे वाहन चालक में हमने देखा कि उसके उत्साह में वृद्धि हो गयी है, बातचीत करने पर उसने बताया कि वह भी एक लेप्चा है, जो कि सिक्किम की एक मूल जनजाति है तथा उसका गांव यहीं पहाड़ों के पीछे है। इन सब बातों को बताते समय उसकी खुशी देखने लायक थी।

मंगन और नागा का झरना – यहां पर यात्रा परमिट चैक होता है, पूछने पर वाहन चालक ने बताया कि कभी भी पहाड़ों में जब कोई दुर्घटना, भू स्खलन आदि होता है तो यही परमिट यह ज्ञात करने में काम आते हैं कि ऊपर कितने पर्यटक रह गये हैं तथा उनका विवरण भी उसी से निकल जाता है। उसने बताया कि इसकी एक प्रति हम जब वापस आयेंगे तब भी यहां जमा करनी होगी।

यहां हमें नजदीक ही एक झरना दिखाई दिया जिसका नाम नागा फाल था। रास्ता बहुत ही सुंदर था इतना कि कैमरे के बस में ना आ सके। ऊपर से मौसम भी सुहावना हो रहा था। इसके बाद एक और झरना आया मंगन से आगे। यह झरना इतना जबरदस्त था कि इसकी झाल यानि पानी के गिरने से होने वाले झारे या हल्के पानी को रोकने के लिये एक दीवार बनायी हुई थी नहीं तो हर गाडी भीगकर ही जाती। इस फाल का इतना रौद्र रूप देखकर हमारे मन में यही विचार आ रहा था कि मई माह में इसका बहाव इतना है तो बरसात के दिनों में कैसा होता होगा। यहां पर हमने काफी देर मस्ती की। आखिर सिक्किम को ऐसे ही झरनों का देश नहीं कहते । यहां पर झरने के पास जाकर तो फोटो भी खींचना मुश्किल हो रहा था। कैमरे में पानी जाने का भी डर था। अतः झरने के इधर और उधर से फोटो लेने पड़े ।

इस तरह से पूरे रास्ते झरनों, पहाड़ों और तिस्ता नदी का मजा लेते हुए हम लाचेन पहुंच गये। शाम के लगभग सात बज गये थे। यहां हमारे ठहरने की व्यवस्था होटल डिलाइट रॉयल में थी। होटल में स्वागत कक्ष में जानकारी करने पर हमें हमारे कमरे में पहुंचा दिया गया। यह प्रथम मंजिल पर स्थित था तथा पहाड़ों पर पड़ने वाली ठंड को देखते हुए यहां कमरे में कार्पेट बिछाया हुआ था तथा ओढ़ने के लिये दो-दो कम्बल रखे गये थे। यहां पर हमारे वाहन चालक तथा होटल के प्रबन्धक ने हमें सावधान किया कि अब आगे की यात्रा में हमें जैकेट पहनने हैं तथा यदि हमारे पास जैकेट नहीं हैं तो हमें यहीं से किराये पर लेनी हैं। इस पर हमने पहले अपना भोजन किया। यहां भी भोजन की गुणवत्ता उत्तम थी तथा एक व्यक्ति बराबर इस बात पर निगाह रख रहा था कि गर्म खाने की उपलब्धता बनी रहे। यहां हमने देखा कि तीन-चार होटलों के खाने की संयुक्त व्यवस्था एक ही जगह पर थी चूंकि यहां पर पर्यटकों की संख्या गंगटोक के मुकाबले कम होती है अतः ऐसी व्यवस्था करना ज्यादा सुविधाजनक था। इसके उपरान्त हमने अपने लिये एक-एक जैकेट ले ली। जैकेट देने वाली स्थानीय महिला ने हमसे ऊनी टोपी भी लेने के बारे में पूछा तो हमने कहा कि हम ऊनी टोपी नहीं लगाते तो इस पर उस महिला ने हमें सावधान किया कि यहां अपार सर्दी पड़ती है तथा उनकी स्वयं की भी तबीयत यहां पर सर्दी से खराब हो जाती है अतः हमें टोपी का प्रयोग अवश्य करना चाहिये। इस पर हमने एक-एक टोपी भी अपने लिये खरीद ली। इसके उपरान्त हमने अपनी आगे की यात्रा का कार्यक्रम देखा तो पाया कि अगले दिन हमें अलसुबह 05.00 बजे ही आगे की यात्रा पर निकलना है अतः हमने अपने सूटकेस भी सामान रखकर पैक कर दिये जिससे सुबह अनावश्यक देरी न हो। इसके उपरान्त हमने अपने फोन में अलार्म लगाया और कमरे की बत्ती बुझा दी।

द्वितीय दिन – प्रातःकाल 04.00 बजे उठकर हमने हमारे नित्य कर्म आदि से निवृत्ति के उपरान्त चाय आदि के लिये पता किया। चाय हमारे कमरे में आ गयी तथा चाय लेकर आने वाले किशोर युवा ने बताया कि हमारे नाश्ते के पैकेट नीचे काउंटर पर तैयार रखे हैं तथा हम ठीक पांच बजे नीचे आ जायें।

गाड़ी में बैठने के बाद हम शीघ्र ही कस्बे से बाहर आ गये और गाड़ी मनोरम दृश्य, बादलों, नदी तथा पहाड़ों का आनन्द लेते हुए आगे बढ़ चली।

वाहन चालक का अजब व्यवहार – हमने अब अपने वाहन चालक से बात की कि अब हम गुरु डोंगमार झील की ओर ही चल रहे हैं ना तो इस पर उसने हमें बताया कि हम पहले काला पत्थर जायेंगे जिसके लिये हमें उसे अलग से रकम चुकानी होगी क्योंकि यह जगह हमारी यात्रा के कार्यक्रम में जुड़ी हुई नहीं है। इस पर हमने उससे पूछा कि काला पत्थर में क्या है और वहां क्यों जाना चाहिये। इस पर उसने कहा कि यह जगह कम ऊंचाई पर है तथा गुरु डोंगमार जाने से पहले यहां जाने पर आपको यदि कोई स्वास्थ्य संबंधी परेशानी नहीं आती है तो आप गुरु डोंगमार जा सकते हैं । इस पर हमने उसे स्पष्ट कर दिया कि हम ऐसी किसी जगह नहीं जाने वाले है जो कि हमारे कार्यक्रम में शामिल नहीं है और वह सीधा गुरु डोंगमार झील ही चले। इस पर अनिच्छा के साथ उसने वाहन गुरु डोंगमार की ओर बढ़ा दिया। रास्ते में हमने चेटन हट पर गाड़ी रोकी। यहां सभी पर्यटक वाहन रुककर अपने साथ लाया नाश्ता तथा गर्म मैगी, चाय आदि खा-पीकर आगे बढ़ते है यहां का दृश्य अत्यन्त मनोरम था यहां दोनों तरफ की लंबी सड़क पर दूर तक के नजारे, पहाड़, बादल, हरे-भरे मैदान आदि स्पष्ट दिखाई दे रहे थे तथा बादल सड़क पर उतरते हुए भी दिखाई दे रहे थे। सुबह के वक्त ऐसा अच्छा मौसम इस बात के स्पष्ट संकेत भी दे रहा था कि हमें गुरु डोंगमार झील पर दृश्यता संबंधी परेशानी नहीं आनी चाहिये। यहां पर कुछ फोटो निकालने के उपरान्त हम आगे बढ़ चले।

रास्ता लम्बा था तथा रास्ते में सैनिक डिपो भी था। यहां पर फिर एक बार हमारी गाड़ी रोककर वाहन चालक ने सुविधा क्षेत्र की ओर इशारा किया। यहां वाहन से उतरते ही हमें तीव्र ठंड का अहसास हुआ तथा मेरी धूजनी छूट गयी। सुविधाओं का इस्तेमाल करके हम शीघ्रता से वहां स्थित सैनिक कैन्टीन में घुस गये। आश्चर्यजनक रूप से हम तीनों में से सिर्फ मैं ही था जो कि ठंड के कारण कांप रहा था अतः मेरी दशा के लिये वो दोनों चिन्तित हो उठे। यहां पर गरमा-गरम आलू बड़े मिल रहे थे हमने पांच आलू बड़े लिये और ठंड के चलते गर्मी पाने के लिये मुझे तीन आलू बड़े खाने को मिले। इन्हें खाने के बाद मुझे कुछ राहत मिली तथा अब संयत होकर मैंने ध्यान दिया कि यह एक सैन्य शिविर था तथा पूरी व्यवस्थायें सेना द्वारा संचालित थी। यहां पर हमने एक बाबा मंदिर भी देखा। इसके उपरान्त हम पुनः अपने वाहन में घुस गये और आगे बढ़ चले।

गुरु डोंगमार झील – उत्तर सिक्किम में स्थित गुरु डोंगमार झील से चीन की सीमा महज पांच किलोमीटर दूर है। गुरु डोंगमार दुनिया की सबसे ऊंचाई पर स्थित झीलों में से एक है। 18200 फुट से भी ज्यादा की ऊंचाई पर स्थित यह झील नवंबर से लेकर मई की शुरुआत तक जमी रहती है। यह झील कंचनजंगा पर्वत श्रृंखला के उत्तर-पूर्व में स्थित है। इससे निकलने वाली एक धारा तिस्ता नदी के लिए उद्गम का काम भी करती है। गुरु डोंगमार दरअसल बौद्ध गुरु पद्म संभव का ही नाम है। सिक्किम के बौद्ध मतावलंबी पद्म संभव की पूजा करते हैं। माना जाता है कि पद्म संभव ने यहां तंत्र साधना की थी। इस झील का संबंध गुरु नानक देव से भी माना जाता है। यहां झील के किनारे एक सर्व धर्म प्रार्थना स्थल भी है। यहां ठंड बहुत होती है और हवा बहुत कम। जाने के लिए खुद को तैयार करना होता है। यहां ज्यादा देर रुका भी नहीं जा सकता।

यहां पहुंचकर वाहन चालक ने एक जगह वाहन खड़ा कर दिया तथा कह दिया कि आप ज्यादा देर बाहर नहीं रुक पायेंगे अतः जल्दी से जगह देखकर वापस आ जाइये। हम जैसे ही वाहन से बाहर आये हमारा सामना तीव्र गति से बहती हुई हवा से हुआ। इस हवा में बर्फ भी शामिल थी परन्तु हमारी खुशकिस्मती से सूरज पूरा निकला हुआ था अतः सारा दृश्य स्पष्ट नजर आ रहा था। यहां पर मेरी स्थिति बाकी दोनों सदस्यों के मुकाबले बेहतर थी अतः मैंने फोटो लिये और जल्दी-जल्दी वहां के खूबसूरत नजारे अपनी स्मृति में कैद किये और पुनः अपने वाहन में घुस गये। यहां पर मई की इन गर्मियों में भी दिन के समय भी तापमान शून्य डिग्री था, जिसके बारे में हमें बाद में ज्ञात हुआ, क्योंकि पहाड़ों पर तो मोबाइल और इन्टरनेट काम नहीं कर रहे थे।

इतनी ऊंचाई पर यदि आप किसी भी प्रकार की सांस लेने की समस्या से पीड़ित हैं तो कृपया उचित सावधानी बरतें। यह प्रवास चिरस्थायी यादों को संजोने के लिए एकदम सही है, लुभावने क्षण जिन्हें केवल अनुभव किया जा सकता है और जिन्हें शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है।

थांगू घाटी – गुरु डोंगमार से लौटते हुए हम थांगू घाटी में रुक गये। यह स्थान 14000 फीट की ऊंचाई पर कम आबादी वाला है और अपने शांतिपूर्ण परिवेश के लिए जाना जाता है। यह जगह सेना द्वारा प्रशासित है यहां ऊपर के मुकाबले ठंड कम थी अतः हमने यहां रुककर बर्फ के साथ खेलने का मजा लिया। हमारे बेटे का जन्मदिन भी होने से हमने उसे एक बर्फ का खिलौना (स्नोमेन) बनाकर भेंट किया। इस तरह कुछ समय यहां रुकना अत्यन्त आनन्द दायक रहा। यहां पर जगह- जगह याक घास चरते दिखाई दे रहे थे तथा दोनों ओर के पर्वत बर्फ से ढंके हुए थे।

यहां से अब हमारी आगामी यात्रा लाचुंग की थी अतः हम उस और बढ़ चले। यहां हमारे रुकने की व्यवस्था होटल डिलाइट रॉयल डीलक्स में थी परन्तु एक दिन पहले ही एजेन्ट ने सूचित किया कि हमारा होटल किन्हीं कारणों से बदल कर डिलाइट फॉर्च्यून हो गया है अतः हम सीधे वहीं पहुंच गये। यहां भी होटल में स्वागत कक्ष में जानकारी करने पर हमें हमारे कमरे में पहुंचा दिया गया। यह प्रथम मंजिल पर स्थित था तथा यहां भी कमरे में कार्पेट बिछाया हुआ था तथा ओढ़ने के लिये दो-दो कम्बल रखे गये थे। हमारे पहुंचते-पहुंचते शाम के लगभग साढ़े सात बज गये थे। कमरे में पहुंच कर हाथ-मुंह धोने के उपरान्त हमने खाने की व्यवस्था के बारे में पूछा तो ज्ञात हुआ कि भोजन शुरु हो गया है। हमने देखा कि खाने में दाल, पनीर व मिक्स वेज आदि के साथ मीठे में खीर भी रखी गयी थी। भोजन का आनंद लेने के उपरांत हम थोड़ी देर होटल के परिसर में टहलते रहे। लाचुंग कस्बा रात की रोशनी से जगमग हो रहा था तथा कोहरे के घिरने से दृश्यता कम होती जा रही थी। इसके उपरांत हम अपने कमरे में आ गये और अपने यात्रा कार्यक्रम पर निगाह डाली तो पाया कि हम कल सुबह नौ बजे घूमने के लिये निकलेंगे अतः हम निश्चिंत होकर सोने चले गये।

तीसरा दिन –

प्रातःकाल ही उठकर हमने अपना सामान पैक किया और नहा-धोकर तैयार हो गए। नाश्ता तैयार था, गर्म परांठे, दही और अचार के साथ खाकर हम गाड़ी में आकर बैठ गए। यहां फिर हमने रास्ते में ही स्थित एक दुकान से जैकेट किराये पर ले ली। आज ज़ीरो प्वाइंट और कई अन्य स्थानों पर जाने का कार्यक्रम था तभी हमारे वाहन चालक कैल्विन लेप्चा नें कहा कि हम ज़ीरो प्वाइंट नहीं जा पाएंगे। यह सुनते ही हम चौंक गए और तुरंत पूछा कि ऐसा क्यों कह रहे हों, यह तो हमारे कार्यक्रम में शामिल है और भारत-चीन की सीमा पर स्थित एक महत्वपूर्ण जगह है । इस पर उसने कहा कि उसकी गाड़ी में कोई खराबी आ गई है और वो नहीं चाहता कि हम बॉर्डर पर जाकर अटक जाएं, इसलिए हम वहाँ नहीं जाएंगे। इस पर नये घटनाक्रम के बारे में एजेन्ट से बात करने के लिये हमने हमारे फ़ोन पर निगाह डाली तो पता चला कि फ़ोन का नेटवर्क नहीं आ रहा है यही स्थिति हमने लाचेन में भी देखी थी जहाँ कस्बे से निकलते ही मोबाइल का नेटवर्क चला गया था। अब यही स्थिति लाचुंग में भी सामने आ गयी। ऐसे में अब हमारे पास कोई चारा नहीं था अतः हमने उससे यही कहा कि चलो भाई जहां तक भी अपना वाहन चलने में सक्षम है। इस पर उसने यूमथांग घाटी की ओर बड़ा दिया।

लाचुंग से यूमथांग घाटी मात्र पच्चीस किमी दूर है। लाचुंग की उस अनोखी सुबह का रसास्वादन कर जब हम यूमथांग की ओर निकले, सुनहरी धूप हमारे रास्ते में अपनी चमक बिखेर रही थी। यूमथांग घाटी को 'फूलों की घाटी' के नाम से भी पुकारा जाता है। दरअसल ये घाटी रोडोडेन्ड्रोन्स की 24 अलग अलग प्रजातियों के लिये मशहूर है। यूमथांग के पास पहुँचते-पहुँचते हमें रोडोडेन्ड्रोन्स के जंगल दिखने शुरू हो गये थे। मार्च अप्रैल से इनके पौधों में कलियाँ लगने लगती हैं। पर पूरी तरह से ये खिलते हैं मई महीने में, जब पूरी घाटी इनके लाल और गुलाबी रंगों से रंग जाती है। हमारी खुशनसीबी से हम इस समय यहां थे अतः हमें यह सुन्दर दृश्य देखना नसीब हुआ। चूंकि ये घाटी 12000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है यहाँ गुरूडांगमार की तरह हरियाली की कोई कमी नहीं थी। आसमान की नीली छतरी, सुबह से हमारे साथ बनी हुई थी अतः प्रकृति का सारा नैसर्गिक सौंदर्य अपने पूरे यौवन पर हमारे समक्ष था।

घाटी के बीच पत्थरों पर उछलती कूदती नदी बह रही थी। जाड़े में ये पत्थर बर्फ के अंदर दब जाते हैं। इन गोल-मटोल पत्थरों के ढ़ेर के साथ साथ हम सब काफी देर तक चलते रहे। नदी के किनारे का इलाका सपाट था और धमाचौकड़ी मचाने का अच्छा स्थान भी।

पहले तो नदी में पत्थर फेंकने का सिलसिला चला कि कौन कितनी दूर तक पानी में छपाका कर सकता है। उससे फुर्सत मिली तो इन समतल मैदानों में लोटने का आनंद प्राप्त किया गया। पास में ही एक सल्फर युक्त गरम पानी का स्रोत था पर वहाँ तक पहुँचने के लिये इस पहाड़ी नदी जिसे वहां की भाषा में कहें तो लाचुंग चू को पार करना था। वहीं से इस ठुमकती नदी को कैमरे में कैद करके और गर्म पानी का स्पर्श कर हम वापस लाचुंग लौट चले। रास्ते में हमें याक का एक रेवड़ भी मिला जब संयोग से हमारा वाहन रुका हुआ था अतः मैंने इस रेवड़ का एक वीडियो भी बना लिया।

भोजन के बाद हमें वापस गंगटोक की राह पकड़नी थी। गंगटोक के रास्ते में तिस्ता घाटी की अंतिम झलक पाने व तस्वीरें लेने के लिये हम गाड़ी से उतरे। तीस्ता से ये इस सफर की आखिरी मुलाकात तो नहीं थी पर उसकी अंतिम तस्वीरें अवश्य थीं। सांझ ढ़लते ढ़लते हम गंगटोक में कदम रख चुके थे।

इस यात्रा के दौरान एक और तो हमने सिक्किम की प्राकृतिक खूबसूरती, पहाड़ों-हिमालय, कंचनजंगा तथा नदियों- तिस्ता, रंगीत, लाचेन, लाचुंग, रंगपो चू आदि का तथा खूबसूरत खुशनुमा मिजाज लोगों से मुलाकात का मजा लिया वहीं दूसरी ओर कुछ अन्य सबक भी पाये। जिसमें मुख्य रूप से एक अच्छे टूर ऑपरेटर का चयन तथा उचित मात्रा में मौसम अनुकूल कपड़े के न ले जाना ही मुख्य हैं। अतः जब भी आप किसी भी लम्बी यात्रा का कार्यक्रम बनाते हैं तो यह अवश्य सुनिश्चित करें कि आपके होटल यात्रा की शुरुआत में जो आपको बताये गये हैं वे बीच में ही बदल नहीं दिये जायें। इसके अतिरिक्त पर्याप्त समय भी इस क्षेत्र को देना आवश्यक है यद्यपि मैंने एक साथ दस दिन का समय यहां बिताया फिर भी कई क्षेत्र देखने से रह गये। हालांकि यह भी सही बात है कि एक साथ इससे ज्यादा भ्रमण करना संभव भी नहीं है क्योंकि एकरसता से यात्रा का मजा कम होने लगता है। कुल मिलाकर यह एक शानदार यात्रा थी जिसकी स्मृति जीवन भर हमारे साथ रहेगी।

❑❑

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में हिंदी पखवाड़ा-2021 : एक रिपोर्ट

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021 तक राजभाषा पखवाडा तथा दिनांक 14.09.2021 को राजभाषा मुख्य समारोह एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह में विभाग के समस्त अधिकारियों /कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि श्री पी.के. सिंह, मुख्य आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर-जोन, जयपुर ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। कार्यक्रम में श्री चन्द्र प्रकाश गोयल, प्रधान आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर ने सभी का स्वागत किया तथा राजभाषा संबंधी प्रगति विवरण प्रस्तुत करते हुए राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आह्वान किया।

इस कार्यक्रम में श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जयपुर ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी बहुत ही सरल, सहज एवं सर्वग्राह्य भाषा है तथा हमें अपने दैनिक कार्यों में हिंदी की छोटी-छोटी टिप्पणियां एवं पत्रादि का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए जिससे राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने का वातावरण सृजित हो सके तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके साथ ही श्री सुग्रीव मीना, आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील आयुक्तालय, जयपुर द्वारा सरकारी काम-काज राजभाषा में करने के साथ ही कम्प्यूटर पर यूनिकोड के माध्यम से कार्य करने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम के अंत में सुश्री शशि पंवार, संयुक्त आयुक्त (रा.भा.), जयपुर द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

राजभाषा –शील्ड :

आयुक्तालयों के अंतर्गत हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए आयुक्तालयों के अधीनस्थ संभागों को संबंधित कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा-शील्ड प्रदान की गई। यह शील्ड आयुक्तालय-जयपुर में केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर संभाग-एफ तथा सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में बीकानेर संभाग को प्रदान की गई।

राजभाषा पखवाडे के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीनों आयुक्तालयों में संयुक्त रूप से निम्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में विजेता रहे प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए जिनका विवरण निम्नानुसार है :-

1. हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
2. हिन्दी टंकण (कम्प्यूटर पर)
3. हिन्दी श्रुतलेखन
4. हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री दयानन्द राहड़, अधीक्षक	2100/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री हेमंत कुमार शर्मा, निरीक्षक	1600/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री पुनीत कुमार गुप्ता, निरीक्षक	1300/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री देवेश कुमार शर्मा, निरीक्षक	500/-

हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री पुनीत कुमार गुप्ता, निरीक्षक	1500/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	सुश्री शालिनी वर्मा, अधीक्षक	1300/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री प्रणव शर्मा, कर-सहायक	1000/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री दयानंद राहड़, अधीक्षक	500 /-

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री मनीष वर्मा, कर-सहायक	1300/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री वरुण यादव, कर-सहायक	900/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री रोहिताश्व यादव, कर-सहायक	700/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री हीरा लाल, कनिष्ठ लिपिक	500/-

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री अनिल कुमार साहू, कर-सहायक	1800/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री सुधीर चन्द श्रीवास्तव, वरिष्ठ निजी सचिव	1400/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री राजेश राठी, अधीक्षक	1100/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री दयानंद राहड़, अधीक्षक	500 /-

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना 2021- 22 हेतु पुरस्कार
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय - जयपुर

हिंदी डिक्टेशन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार :-			राशि (रु. /- में)
1.	*प्रथम पुरस्कार (1)*	1. श्री राधेश्याम सैनी, मुख्य लेखा अधिकारी	5000/-
हिंदी टिप्पण /आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :-			राशि (रु. /- में)
1.	*प्रथम पुरस्कार (2)*	1. श्री मान सिंह गुर्जर, कर-सहायक	5000/-
		2. श्री ऋषि राज पबरी, कर-सहायक	5000/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार (3)*	1. श्री प्रदीप भूरिया, कर-सहायक	3000/-
		2. श्री नितेश कुमार तिवाडी, कर-सहायक	3000/-
		3. श्री टीकम चन्द , प्रशासनिक अधिकारी	3000/-
3.	*तृतीय पुरस्कार (5)*	1. श्री यशपाल सिंह, कर-सहायक	2000/-
		2. श्री तिलक शर्मा, कनिष्ठ लिपिक	2000/-
		3. श्री गौरव शर्मा, कर-सहायक	2000/-
		4. सुश्री सरोज मीना, कर-सहायक	2000/-
		5. सुश्री शालिनी गांगोदिया, कर-सहायक	2000/-

केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय–जयपुर

हिंदी टिप्पण /आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :–		राशि (रु. /– में)
1. *प्रथम पुरस्कार (2)*	1. श्री अमित वर्मा, कर–सहायक	5000/–
	2. श्री रोहिताश्व कुमार यादव, कर–सहायक	5000/–
2. *द्वितीय पुरस्कार (3)*	1. श्री बलवंत सिंह नाथावत, कर–सहायक	3000/–
	2. श्री गौरव माथुर, कर–सहायक	3000/–
	3. श्री भगवान सहाय, कर–सहायक	3000/–
3. *तृतीय पुरस्कार (5)*	1. श्री श्रीफल मीना, कनिष्ठ लिपिक	2000/–
	2. श्री मनोज कुमार, कर–सहायक	2000/–
	3. श्री लक्ष्मी नारायण मीणा, कर–सहायक	2000/–
	4. श्री पुष्पेन्द्र सिंह, कर–सहायक	2000/–
	5. फूल सिंह महावर, कर–सहायक	2000/–

सीमा शुल्क आयुक्तालय–जयपुर

हिंदी टिप्पण /आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :–		राशि (रु. /– में)
1. *प्रथम पुरस्कार (2)*	1. श्री शांता प्रकाश टेलर, कर–सहायक	5000/–
	2. विश्वास मौर्य, कर–सहायक	5000/–
2. *द्वितीय पुरस्कार (3)*	1. श्री सुनील सुईवाल, कनिष्ठ लिपिक	3000/–
	2. सुश्री सुनीता सैनी, कर–सहायक	3000/–
	3. सुश्री राजरानी शर्मा, कर–सहायक	3000/–
3. *तृतीय पुरस्कार (5)*	1. श्री हेमंत खोंलिया, कनिष्ठ लिपिक	2000/–
	2. श्री अजय कुमार पाण्डेय, प्रशासनिक अधिकारी	2000/–
	3. श्री सुभाष चन्द्र सेन, कनिष्ठ लिपिक	2000/–
	4. श्री गुलाब सिंह, कर–सहायक	2000/–
	5. श्री अंकित पूनिया, कर–सहायक	2000/–

❑❑

14 सितम्बर
हिंदी दिवस
मेरी भाषा मेरा गौरव है, मेरा देश महान !

शिवानी माहेश्वरी, उपनिदेशक (लागत)
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर
अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

शौर्य शुक्ल, पुत्र श्रीमती नीता शुक्ल
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

ईप्शीता सोलंकी
पुत्री श्री विशाल सोलंकी, अधीक्षक
सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

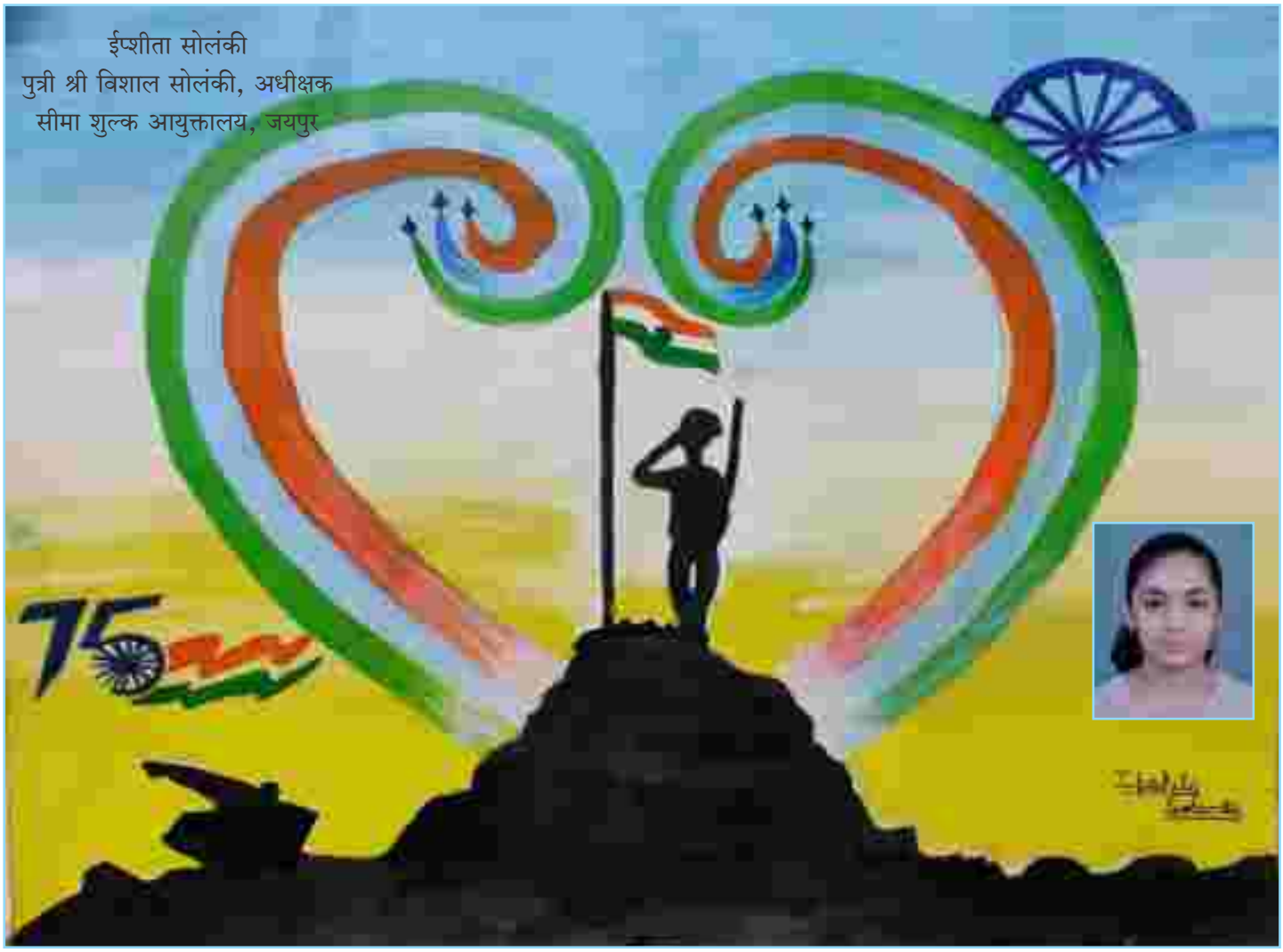

श्री जगदीश तँवर,
अधीक्षक सी.जी.एस.टी. जोधपुर
ने वर्ष 2021 में भारत की ओर से टीम
प्रतिस्पर्धा में कप्तान के रूप में
विश्व सीनियर टेनिस प्रतियोगिता उमंग,
क्रोसिया में भाग लिया।
व्यक्तिगत (45+) मिक्स-युगल
वर्ग प्रतियोगिता में भारत व विभाग
के लिए कांस्य पदक जीता।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 26.08.2022 को कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय माल और सेवा कर, उदयपुर का निरीक्षण दौरा

कुम्भलगढ़ फोर्ट, राजसमन्द

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर